परिचय

क—हिंदी भाषा

हिंदी शब्द की व्युत्पत्ति

संस्कृत की स ध्वनि फारसी मे ह के रूप मे पायी जाती है, अतः संस्कृत के 'सिधु' और 'सिधी' शब्दो के फारसी रूप 'हिंद' और 'हिंदी' हो जाते है। प्रयोग तथा रूप की दृष्टि से 'हिंदवी' या 'हिंदी' शब्द फारसी भाषा का ही है। संस्कृत अथवा आधुनिक भारतीय भाषाओ के किसी भी प्राचीन ग्रंथ मे इसका व्यवहार नही किया गया है। फारसी मे 'हिंदी' का शब्दार्थ 'हिंद से सम्बन्ध रखनेवाला' है, किन्तु इसका प्रयोग 'हिंद के रहनेवाले' तथा 'हिंद की भाषा', के अर्थ मे होता रहा है। 'हिंदी' शब्द के अतिरिक्त 'हिंदू' शब्द भी फारसी से ही आया है। फारसी मे' हिंदू' शब्द का व्यवहार 'इस्लाम धर्म के न माननेवाले 'हिंद-वासी' के अर्थ मे प्रायः मिलता है। इसी अर्थ मे यह शब्द भी अपने देश मे प्रचलित हो गया है।

हिंदी भाषा का प्रचलित अर्थ तथा प्रभाव का क्षेत्र

शब्दार्थ की दृष्टि से 'हिंदी' शब्द का प्रयोग हिंद अर्थात् भारत मे बोली जाने वाली किसी भी आर्य, द्राविड अथवा अन्य कुल की भाषा के लिए हो सकता है, किन्तु आजकल वास्तव मे इसका व्यवहार उत्तर भारत के मध्यभाग के हिंदुओं को वर्त्तमान साहित्यिक भाषा के अर्थ मे मुख्यतया तथा वर्त्तमान साहित्यिक भाषा के साथ-साथ इस भूमिभाग की समस्त बोलियो और उनसे सम्बन्ध रखने वाले प्राचीन साहित्यिक रूपो के लिये साधारणतया होता है। इस भूमिभाग की सीमाएँ पश्चिम मे जैसलमीर, उत्तर पश्चिम मे अम्बाला, उत्तर मे शिमला से

लेकर नेपाल के पूर्वी छोर तक के पहाडी प्रदेश का दक्षिण भाग, पूरब में भागलपुर, दक्षिण पूरब मे रायपुर तथा दक्षिण पश्चिम मे खँडवा तक पहुँचती है। इस भूमिभाग मे हिन्दुओ के आधुनिक साहित्य और पत्र-पत्रिकाओ तथा शिष्ट बोल-चाल और शिक्षा की भाषा एक है। साधारण-तया 'हिंदी' शब्द का प्रयोग जनता मे इसी साहित्यिक खड़ी बोली हिंदी भाषा के अर्थ मे किया जाता है, किन्तु साथ ही इस भूमिभाग की ग्रामीण बोलियों जैसे मारवाड़ी, ब्रज, छत्तीसगढ़ी, मैथिली आदि को तथा प्राचीन ब्रज, अवधी आदि साहित्यिक भाषाओं को भी हिंदी भाषा के ही अंतर्गत माना जाता है। 'हिंदी' शब्द का यह प्रचलित अर्थ है। इस प्रकार से हिंदी को साहित्यिक भाषा मानने वाले प्रदेश की जनसंख्या लगभग १२ करोड़ है।

भाषा-शास्त्र की दृष्टि से हिंदी भाषा का अर्थ तथा क्षेत्र

भाषा-शास्त्र की दृष्टि से ऊपर दिये हुये भूमिभाग मे पॉच उपभाषाएँ मानी जाती है। राजस्थान की बोलियो के समुदाय को 'राजस्थानी उप-भाषा' के नाम से पृथक् भाषा माना गया है। बिहार मे मिथिला और पटना-गया की बोलियों तथा उत्तर प्रदेश मे बनारस, गोरखपुर कमिश्नरियों की बोलियों के समूह को एक भिन्न बिहारी उपभाषा माना जाता है। उत्तर के पहाड़ी प्रदेशों की बोलियाँ 'पहाडी उप-भाषा' के नाम से पृथक् मानी जाती है। शेष मध्य के भूमिभाग मे हिंदी के दो उपरूप माने जाते है जो 'पश्चिमी और पूर्वी उपभाषा' के नाम से पुकारे जाते है। भाषा-शास्त्र से संबंध रखने वाले ग्रन्थो मे 'हिंदी भाषा' शब्द का प्रयोग कभी-कभी इसी मध्य के भूमिभाग की बोलियो तथा उनकी आधारभूत साहित्यिक भाषाओ के अर्थ मे होता है। कुछ लोग पंजाबी को भी हिंदी की एक उपभाषा मानते है।

हिंदी शब्द के शब्दार्थ, प्रचलित अर्थ तथा शास्त्रीय अर्थ के भेद को 'हिंदी भाषा' के प्रत्येक विद्यार्थी को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए।

ख—खड़ीबोली हिन्दी के साहित्यिक रूपान्तर-हिंदी, उर्दू, हिंदुस्तानी

इस पुस्तक मे खडीबोली शब्द का प्रयोग मेरठ-बिजनौर के आस-पास बोली जाने वाली गाँव की भाषा के अर्थ मे किया गया है। भाषा सर्वे मे ग्रियर्सन महोदय ने इस बोली को 'वर्नाक्युलर हिन्दुस्तानी, नाम दिया है, किन्तु खड़ीबोली नाम अधिक अच्छा है। कभी-कभी ब्रजभाषा तथा अवधी आदि प्राचीन साहित्यिक भाषाओं से भेद करने के लिए आधुनिक साहित्यिक हिन्दी को भी खडी बोली के नाम से पुकारा जाता है।[1] साहित्यिक अर्थ मे प्रयुक्त खडीबोली शब्द तथा भाषा तथा भाषाशास्त्र की दृष्टि से प्रयुक्त खड़ीबोली शब्द के इस भेद को स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए। ब्रजभाषा की अपेक्षा यह बोली वास्तव मे कुछ खडी-लगती है, कदाचित् इसी कारण इसका नाम

खड़ीबोली हिंदी

---

[1] इस अर्थ में खड़ीबोली का सबसे प्रथम प्रयोग लल्लूजी लाल ने प्रेमसागर की भूमिका मे किया है। लल्लूजी लाल के ये वाक्य खड़ीबोली शब्द के व्यवहार पर बहुत कुछ प्रकाश डालते हैं, अतः ज्यों-त्यों नीचे उद्धृत किये जाते है। आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के आदि रूप का भी यह उद्धरण अच्छा नमूना है। लल्लूजी लाल लिखते है :—
"एक समै व्यासदेव कृत श्रीमत भागवत के दशमस्कंध की कथा को चतुर्भुज मिश्र ने दोहे चौपाई में ब्रज-भाषा किया। सो पाठशाला के लिये श्री महाराजाधिराज, सकल गुणीनिधान, पुण्यवान महाजन, मारकुइस वलिजलि गवरनर जनरल प्रतापी के राज और श्रीयुत गुनगाहक, गुनियन सुखदायक जान गिलकिरिस्त महाशय जी आज्ञा से सम्बत १८६० में श्री लल्लू जी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र अवदीच आगरे वाले ने विस का सार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ीबोली में कह नाम प्रेम-सागर धरा।"

खड़ी बोली पड़ा। साहित्यिक हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी इन तीनो रूपो का सम्बन्ध इस खडीबोली से ही है।

आधुनिक साहित्यिक हिंदी और उर्दू में साम्य तथा भेद

आधुनिक साहित्यिक हिन्दी के उस दूसरे साहित्यिक रूप का नाम उर्दू है जिसका व्यवहार उत्तर भारत के शिक्षित मुसलमानो तथा उनसे अधिक संपर्क मे आने वाले कुछ हिन्दुओं जैसे, पंजाबो, देसी, काश्मीरी तथा पुराने कायस्थो आदि मे पाया जाता है। भाषा की दृष्टि से इन दोनो साहित्यिक भाषाओ मे विशेष अंतर नहीं, वास्तव मे दोनो का मूलाधार मेरठ-बिजनौर की खडी बोली है। अत जन्म से उर्दू और आधुनिक साहित्यिक हिन्दी सगी बहने है। विकसित होने पर इन दोनो मे जो अन्तर हुआ उसे रूपक मे यो कह सकते है कि एक तो हिन्दुआनी बनी रही और दूसरी ने मुसल्मान धर्म ग्रहण कर लिया। साहित्यिक वातावरण, शब्द-समूह तथा लिपि मे हिन्दी और उर्दू मे आकाश पाताल का भेद है। साहित्यिक हिन्दी इन सब बातो के लिए भारत की प्राचीन संस्कृति तथा उसके वर्तमान रूप की ओर देखती है। भारत के वातावरण मे उत्पन्न होने और पलने पर भी उर्दू शैली फ़ारस और अरब की सभ्यता और साहित्य से जीवन-श्वास ग्रहण करती है।

उर्दू भाषा का जन्म और विकास

ऐतिहासिक दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिन्दी की अपेक्षा साहित्यिक उर्दू का जन्म पहले हुआ था। भारतवर्ष मे आने पर बहुत दिनो तक मुसलमानो का केन्द्र दिल्ली रहा, अतः फारसी, तुर्की और अरबी बोलने वाले मुसलमानो ने जनता से बात-चीत और व्यवहार करने के लिए धीरे-धीरे दिल्ली के आस-पास की बोली सीखी। इस देशी बोली मे अपने विदेशी शब्द-समूह को स्वतन्त्रता पूर्वक मिला लेना, इनके लिए स्वाभाविक था। इस प्रकार की बोली का व्यवहार सबसे प्रथम

'उर्दू-ए-मुअल्ला' अर्थात् दिल्ली के महलो के बाहर 'शाही फौजी बाजारों' मे होता था, अत: इसी से दिल्ली के पडोस की बोली के इस विदेशी शब्दो से मिश्रित रूप का नाम 'उर्दू' पडा। 'उर्दू' शब्द का अर्थ बाजार है। वास्तव मे, आरम्भ मे उर्दू बाजारू भाषा थी। शाही दरबार से संपर्क मे आनेवाले हिंदुओ का इसे अपनाना स्वाभाविक था, क्योकि फारसी-अरबी शब्दो से मिश्रित किन्तु अपने देश की एक बोली मे इन भाषा-भाषी विदेशियो से बातचीत करने मे इन्हे सुविधा रहती होगी। जैसे भारतीय भाषाएँ बोलने वाले लोग ईसाई-धर्म ग्रहण कर लेने पर अँग्रेजी से अधिक प्रभावित होने लगते है, उसी तरह मुसलमान धर्म ग्रहण कर लेने वाले हिंदुओ मे भी अरबी-फ़ारसी के बाद उर्दू का विशेष आदर होना स्वाभाविक था। धीरे-धीरे यह उत्तर भारत की मुसलमान जनता की विशेष भाषा हो गयी। शासको द्वारा अपनाये जाने के कारण यह उत्तर भारत के समस्त शिष्ट समुदाय की भाषा मानी जाने लगी। जिस तरह आजकल पढे-लिखे हिंदुस्तानी के मुँह से 'मुझे चास (Chance) नही मिला' निकलता है, उसी तरह उस समय 'मुझे मौका नही मिला' निकला होगा। जनता इसो को 'मुझे औसर नही मिला' कहती होगी और अब भी कहती है। बोलचाल की उर्दू का जन्म तथा प्रचार कदाचित् इसी प्रकार हुआ।

एक अंग्रेज विद्वान ग्रैहम बेली महोदय ने उर्दू की उत्पत्ति के संबंध मे एक नया विचार रक्खा है। उनकी समझ मे उर्दू की उत्पत्ति दिल्ली मे खडीबोली के आधार पर नही हुई, बल्कि इससे पहिले ही पंजाबी के आधार पर यह लाहौर के आस-पास बन चुकी थी और दिल्ली मे आने पर मुसलमान शासक इसे अपने साथ ही लाये थे। खड़ीबोली के प्रभाव से इनमे बाद को कुछ परिवर्तन अवश्य हुए, किन्तु इसका मूलाधार पंजाबी भाषा को मानना चाहिये, खडीबोली को नही। इस संबंध मे बेली महोदय का सबसे बडा तर्क यह है कि दिल्ली को शासन केन्द्र बनाने के पूर्व १००० से १२०० ईसवी तक लगभग दो सौ वर्ष मुसलमान पंजाब मे रहे।

उस समय वहाँ की जनता के संपर्क मे आने के लिए इन्होने कोई न कोई भाषा अवश्य सीखी होगी और यह तत्कालीन पंजाबी ही हो सकती है। यह स्वाभाविक है भारत मे आगे बढने पर वे इसी भाषा का प्रयोग करते रहे हो। जो हो, बिना पूर्ण खोज के उर्दू की उत्पत्ति के संबंध मे निश्चित रूप से कुछ नही कहा जा सकता। इस समय सर्वसम्मत मत यही है कि मेरठ-बिजनौर की खडीबोली उर्दू तथा आधुनिक साहित्यिक हिन्दी दोनो ही की मूलाधार है।

उर्दू का साहित्य में प्रयोग

उर्दू का साहित्य मे प्रयोग दक्षिण हैदराबाद के मुसलमानी दरबार से प्रारम्भ हुआ। उस समय तक दिल्ली-आगरा के दरबार मे साहित्यिक भाषा का स्थान फ़ारसी को मिला हुआ था। साधारण जनसमुदाय की भाषा होने के कारण अपने घर मे उर्दू हेय समझी जाती थी। हैदराबाद रियासत की जनता की भाषाएँ भिन्न द्राविड वंश की थी, अतः उनके बीच मे यह मुसलमानी आर्यभाषा, शासको की भाषा होने के कारण विशेष गौरव की दृष्टि से देखी जाने लगी, इसीलिए इसका साहित्य मे प्रयोग करना बुरा नही समझा गया। औरङ्गाबादी महाकवि वली उर्दू साहित्य के जन्मदाता माने जाते है। वली के कदमो पर ही मुगल-काल के उत्तरार्द्ध मे दिल्ली मे और उसके बाद लखनऊ के मुसलमानी दरबार मे भी उर्दू भाषा मे कविता करने वाले कवियों का एक समुदाय बन गया जिसने इस बाजारू बोली को साहित्यिक भाषा के सिंहासन पर आसीन कर दिया। फारसी शब्दो के अधिक मिश्रण के कारण कविता मे प्रयुक्त उर्दू को 'रेख्ता' (मिश्रित) कहते थे। स्त्रियो की भाषा 'रेख्ती' कहलाती थी। दक्षिणी मुसलमानो की भाषा 'दक्खिनी' उर्दू कहलाई। इसमे फारसी शब्द कम प्रयुक्त होते थे और उत्तर भारत की उर्दू की अपेक्षा यह कम परिमार्जित थी। ये सब उर्दू के रूप-रूपान्तर है। उर्दू भाषा का गद्य मे व्यवहार हिंदी भाषा के गद्य के समान, अंग्रेजो के शासन काल मे प्रारम्भ हुआ। मुद्रणकला के साथ इसका प्रचार भी

अधिक बढा। उर्दू भाषा अरबी-फारसी अक्षरो मे लिखी जाती है। पंजाब तथा उत्तर प्रदेश मे कचहरी, तहसील और गाँव मे उर्दू मे ही सरकारी कागज लिखे जाते थे, अत. नौकरी-पेशा हिन्दुओ के लिये भी इसकी जानकारी रखना अनिवार्य था। आगरा दिल्ली की तरफ के हिन्दुओ मे इसका अधिक प्रचार होना स्वाभाविक था। पंजाबी भाषा मे विशेष साहित्य न होने के कारण पंजाबी लोगो ने तो इसे साहित्यिक भाषा की तरह अपना रक्खा था। हिन्दी-भाषी प्रदेश मे हिन्दुओं के बीच उर्दू का प्रभाव दिन-दिन कम हो रहा है।

'हिन्दुस्तान' नाम यूरोपीय लोगो का दिया हुआ है। आधुनिक साहित्यिक हिन्दी या उर्दू की बोल-चाल का रूप 'हिन्दुस्तानी' कहलाता है। केवल बोल-चाल मे प्रयुक्त होने के कारण इसमे फारसी अथवा संस्कृत शब्दो की भरमार नही रहती, यद्यपि इसका झुकाव उर्दू की तरफ अधिक रहता है।

हिन्दुस्तानी

कदाचित् यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि हिन्दुस्तानी उत्तर भारत के पढे-लिखे लोगो की बोल-चाल की उर्दू है। उत्पत्ति की दृष्टि से आधुनिक साहित्यिक हिन्दी तथा उर्दू के समान ही इसका आधार भी खड़ी बोली है। एक तरह से यह हिन्दी उर्दू के अपेक्षा खडीबोली के अधिक निकट है, क्योकि शब्द-समूह मे यह फारसी-संस्कृत के अस्वाभाविक प्रभाव से बहुत कुछ मुक्त है। दक्षिणी के ठेठ द्राविड़ प्रदेशो को छोड कर शेष समस्त उत्तर भारत मे हिन्दी-उर्दू का यह व्यावहारिक रूप हर जगह समझ लिया जाता है। कलकत्ता, हैदराबाद, बम्बई, करॉची, जोधपुर, पेशावर, नागपुर, काश्मीर, लाहौर, दिल्ली, लखनऊ, बनारस, पटना आदि सब जगह हिन्दुस्तानी बोली से काम निकल सकता है। अंतिम चार-पाँच स्थान तो इसके घर ही है।

साधारण श्रेणी के लोगो के लिए लिखे गये साहित्य मे हिन्दुस्तानी का ही प्रयोग पाया जाता है। किस्से, गजलो और भजनों आदि की बाजारू किताबें हिन्दुस्तानी मे ही मिलेगी। अक्सर ऐसी किताबें जन-

समुदाय को प्रिय हो जाती है। फारसी और देव-नागरी दोनो लिपियो मे छापी जाती है। इस ठेठ भाषा मे कुछ साहित्यिक पुरुषो ने भी लिखने का प्रयास किया है। इंशा की 'रानी केतकी की कहानी' तथा अयोध्या सिंह उपाध्याय की 'ठेठ हिन्दी का ठाठ' तथा 'बोलचाल' हिन्दुस्तानी साहित्यिक भाषा बनाने के प्रयोग है, जिसमे ये सज्जन सफल नही हो सके।

ग—हिन्दी की ग्रामीण बोलियाँ

पश्चिमी तथा पूर्वी उपभाषाएँ

प्राचीन 'मध्यदेश' की आठ मुख्य बोलियो के समुदाय को भाषा-शास्त्र की दृष्टि से पश्चिमी तथा पूर्वी उपभाषा के नाम से पुकारा जाता है। इनमे से १—खड़ी बोली, २—बाँगरू, ३—ब्रज, ४—कन्नौजी, तथा ५—बुन्देली। इन पाँच को भाषासर्वे मे 'पश्चिमी' नाम दिया गया है तथा १—अवधी, २—बघेली तथा ३—छत्तीसगढी इन शेष तीन को 'पूर्वी' नाम से पुकारा गया है। ऐतिहासिक दृष्टि से पश्चिमी का सम्बन्ध शौरसेनी प्राकृत से तथा पूर्वी का सम्बन्ध अर्द्ध मागधी प्राकृत से जोडा जाता है। भाषासर्वे के आधार पर इन आठो बोलियों का सक्षिप्त वर्णन नीचे दिया जाता है।

खडीबोली पश्चिम रोहिलखंड, गंगा के उत्तरी दोआब तथा अम्बाला जिले की बोली है। खडीबोली तथा हिन्दी उर्दू आदि का संबंध ऊपर बतलाया जा चुका है। मुसलमानी प्रभाव के निकटतम होने के कारण ग्रामीण खड़ीबोली मे भी फारसी अरबी के शब्दो का व्यवहार अन्य बोलियो की अपेक्षा अधिक है, किन्तु ये प्राय: अर्धतत्सम अथवा तद्भव रूपो मे प्रयुक्त किये जाते है। इन्ही को तत्सम रूप मे प्रयुक्त करने से खड़ीबोली मे उर्दू की झलक आने लगती है। खड़ीबोली निम्नलिखित स्थानो मे गाँवों की बोली है :—

खड़ी बोली

रामपुर राज्य, मुरादाबाद, बिजनौर, मेरठ, मुजफ्फर नगर, सहारनपुर, देहरादून के मैदानी भाग, अम्बाला तथा कलसिया और पटियाला रियासत के पूर्वी भाग ।

खड़ीबोली बोलने वालो को संख्या ५३ लाख के लगभग है । इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित यूरोपीय देशो की जनसंख्या के अंक रोचक प्रतीत होगे :—ग्रीस ५४ लाख, बलगेरिया ४६ लाख तथा तीन भाषाएँ बोलने वाला स्विटजरलैण्ड ३६ लाख ।

बाँगरू बोली जाटू या हरियानी नाम से भी प्रसिद्ध है । यह दिल्ली, कर्नाल, रोहतक और हिसार जिलों और पड़ोस के पटियाला, नाभा और

बाँगरू

झीद रियासतो के गाँवो मे बोली जाती है । एक प्रकार से यह पंजाबी और राजस्थानी मिश्रित खडी बोली है । बाँगरू बोलने वालो की संख्या लगभग २२ लाख है । बाँगरू बोली की पश्चिमी सीमा पर सरस्वती नदी बहती है । हिन्दी भाषी प्रदेश के प्रसिद्ध युद्धक्षेत्र पानीपत तथा कुरुक्षेत्र इसी बोली की सीमा के अन्तर्गत पडते है, अतः इसे हिन्दी की सरहदी बोली मानना अनुचित न होगा ।

मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य मे ब्रज की बोली की गिनती साहित्यिक भाषाओ में होने लगी थी इसीलिए आदरार्थ वह ब्रजभाषा कह कर

ब्रजभाषा

पुकारी जाने लगी । विशुद्ध रूप मे यह बोली अब भी मथुरा, आगरा, अलीगढ तथा धौलपुर मे बोली जाती है । गुडगाँव, भरतपुर, करौली तथा ग्वालियर के पश्चिमोत्तर भाग मे ब्रजभाषा मे राजस्थानी और बुन्देली की कुछ-कुछ झलक आने लगती है । बुलन्दशहर, बदायूँ और नैनीताल की तराई मे खडी बोली का कुछ प्रभाव शुरू हो जाता है तथा एटा, मैनपुरी और बरेली जिलो मे कुछ कन्नौजीपन आने लगता है । वास्तव मे पीलीभीत, इटावा की बोली भी कन्नौजी की अपेक्षा ब्रजभाषा के अधिक निकट है । ब्रजभाषा बोलने वालो की संख्या लगभग ७६ लाख है । तुलना के लिए:

नीचे लिखे देशो की जनसंख्याओ के अङ्क रोचक प्रतीत होगे :—टर्की ८० लाख, बेलजियम ७७ लाख, हंगरी ७८ लाख, हालैंड ६८ लाख, आस्ट्रिया ६१ लाख तथा पुर्तगाल ६० लाख।

जब से गोकुल बल्लभ संप्रदाय का केन्द्र हुआ तब से ब्रज भाषा मे कृष्ण साहित्य लिखा जाने लगा। धीरे-धीरे यह समस्त हिन्दी भाषी प्रदेश की साहित्यिक भाषा हो गयी। उन्नीसवी सदी मे साहित्य के क्षेत्र मे खड़ीबोली ब्रजभाषा की स्थानापन्न हुई।

कन्नौजी

कन्नौजी बोली का क्षेत्र ब्रजभाषा और अवधी के बीच मे है। कन्नौजी को पुराने कन्नौज राज्य की बोली समझना चाहिए। वह ब्रजभाषा से बहुत मिलती-जुलती है। कन्नौजी का केन्द्र फर्रुखाबाद है किन्तु उत्तर मे यह हरदोई, शाहजहाँपुर तथा पीलीभीत तक और दक्षिण मे इटावा तथा कानपुर के पश्चिम भाग मे बोली जाती है। कन्नौजी बोलने वालो की संख्या लगभग ४५ लाख है। ब्रजभाषा के पडोस मे होने के कारण कन्नौजी साहित्य के क्षेत्र मे कभी भी आगे नही आ सकी। इस भूमि भाग मे प्रसिद्ध कविगण तो कई हुए किन्तु इन सबने ब्रजभाषा मे ही अपनी रचनाएँ लिखी।

बुंदेली

बन्देली बुन्देलखण्ड की बोली है। शुद्ध रूप मे यह झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, भूपाल, ओड़छा, सागर, नृसिंहपुर, सिवनी तथा हुशङ्गाबाद मे बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिंदवाडा के कुछ भागों मे पाये जाते है। बुन्देली बोलने वालो की संख्या ६९ लाख के लगभग है। मध्यकाल मे बुन्देलखण्ड साहित्य का प्रसिद्ध केन्द्र रहा है, किन्तु वहाँ होने वाले कवियो ने भी ब्रजभाषा मे ही कविता की है यद्यपि इनकी ब्रजभाषा पर बुन्देली बोली का प्रभाव अधिक पाया जाता है।

हरदोई जिले को छोडकर अवधी शेष अवध की बोली है। यह लखनऊ, उन्नाव, रायबरेली, सीतापुर, खीरी, फैजाबाद, गोडा, बहराइच, सुल्तानपुर, प्रतापगढ, बाराबंकी मे तो बोली ही जाती है, इसके अतिरिक्त दक्षिण मे गंगापार इलाहाबाद और फतेहपुर मे तथा कानपुर के कुछ हिस्से मे भी बोली जाती है। बिहार के मुसलमान भी अवधी बोलते है। यह खिचड़ी वाला भाग मुजफ्फरपुर तक है। अवधी बोलने वालो की संख्या लगभग १ करोड ४२ लाख है। ब्रजभाषा के साथ अवधी मे भी कुछ साहित्य लिखा गया था। यद्यपि बाद को ब्रजभाषा की प्रतिद्वन्द्विता मे यह ठहर न सकी। पद्मावत और रामचरित-मानस अवधी के दो सुप्रसिद्ध ग्रंथरत्न है। आधुनिक रचनाओ मे कृष्णायन का उल्लेख किया जा सकता है।

अवधी

अवधी के दक्षिण मे बघेली का क्षेत्र है। इसका केन्द्र रीवॉ राज्य से, किन्तु यह मध्यप्रान्त के दमोह, जबलपुर, मॉडला तथा बालघाट के जिलो तक फैली हुई है। बघेली बोलने वालो की संख्या लगभग ४६ लाख है। जिस तरह बुन्देलखण्ड के कवियो ने ब्रजभाषा को अपना रक्खा था उसी तरह रीवाँ के दरबार मे बघेली कविगण साहित्य भाषा के रूप मे अवधी का आदर करते थे।

बघेली

छत्तीसगढ़ी को लरिया या खल्ताही भी कहते है। यह मध्यप्रान्त मे रायपुर और विलासपुर के जिलो तथा काकेर, नदगाँव, खैरागढ, रायगढ, कोरिया, सरगुजा आदि राज्यों मे भिन्न-भिन्न रूपो मे बोली जाती है। बाजार की प्रधान बोली हलबी का मूलाधार भी छत्तीसगढी बोली ही है। छत्तीसगढी बोलने वालो की संख्या लगभग ३३ लाख है जो डेनमार्क की जनसंख्या के बिलकुल बराबर है। मिश्रित रूपो को मिलाकर बोलने वालो की संख्या ३८ लाख के लगभग हो जाती है जो स्विटजरलैण्ड की जनसंख्या से टक्कर

छत्तीसगढ़ी

लेने लगती है। छत्तीसगढी मे पुराना साहित्य बिल्कुल ही नही है। कुछ नयी बाजारू किताबें अवश्य छपी हैं।

बिहारी उपभाषा

बिहारी उपभाषा के अन्तर्गत तीन ग्रामीण बोलियाँ मानी जाती हैं—भोजपुरी, मैथिली तथा मगही।

भोजपुरी

बिहार के शाहाबाद जिले मे भोजपुर एक छोटा-सा कस्बा और परगना है। भोजपुरी बोली का नाम इसी स्थान से पड़ा है यद्यपि यह दूर-दूर तक बोली जाती है। भोजपुरी बनारस, मिर्जापुर, जौनपुर, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, बस्ती, आजमगढ, शाहाबाद, चम्पारन, सारन तथा छोटा नागपुर तक फैली पडी है। भोजपुरी बोलने वालो की संख्या पूरे-पूरे करोड के लगभग है। भोजपुरी मे साहित्य विशेष नही है। संस्कृत का केन्द्र होने के अतिरिक्त काशी हिन्दी का भी प्राचीन केन्द्र रहा है, किन्तु भोजपुरी बोलो से घिरे रहने पर भी इस बोली का प्रयोग साहित्य मे कभी भी विशेष नही किया गया। काशी मे रहते हुए भी कविगण प्राचीन काल मे ब्रज तथा अवधी मे और आधुनिक काल मे आधुनिक साहित्यिक खड़ी बोली हिन्दी मे लिखते रहे है। भाषा सम्बन्धी कुछ साम्यो को छोड़कर शेष सब बातो मे भोजपुरी प्रदेश बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश मे अधिक निकट रहा है।

मैथिली

मैथिली बोली बिहार प्रान्त मे गङ्गा के उत्तर मे दरभंगा के आसपास बोली जाती है। इनमे लिखा कुछ प्राचीन साहित्य भी उपलब्ध है। मैथिली कवियो मे विद्यापति का नाम उनके पदो के कारण सबसे अधिक प्रसिद्ध है। मैथिली प्रदेश मे एक भिन्न लिपि भी व्यवहार मे आती है जो बंगाली लिपि से अधिक मिलती-जुलती है।

मगही बोली बिहार प्रान्त मे गङ्गा के दक्षिण मे बोली जाती है।

इसके मुख्य केन्द्र पटना और गया समझने चाहिए। मगही में कोई साहित्यिक परम्परा नहीं रही है। प्रादेशिक रूप में लिखने में कैथी लिपि का व्यवहार होता है। बिहार प्रान्त की इन दोनों बोलियों के बोलनेवाले लगभग १½ करोड़ है।

मगही

व्युत्पत्ति की दृष्टि से बिहारी उपभाषा का सम्बन्ध मागधी प्राकृत तथा अपभ्रंश से माना जाता है। बंगाली, उड़िया तथा असमी का सम्बन्ध भी मागधी से है। यही कारण है कि भाषा सम्बन्धी कुल लक्षणों मे बिहारी उपभाषा की बोलियाँ बङ्गाली आदि से अधिक मिलती-जुलती मालूम पडती है। बिहार प्रान्त मे खड़ी बोली हिन्दी ही साहित्यिक भाषा है। शिक्षा का माध्यम भी खड़ी बोली ही है। सांस्कृतिक दृष्टि से भी बिहारी प्रदेश पश्चिमी मध्यदेश से सम्बद्ध रहा है।

राजस्थानी उपभाषा

पंजाब के ठीक दक्षिण मे राजस्थानी उपभाषा का प्रदेश है। एक प्रकार से यह ठेठ मध्यदेश की प्राचीन भाषा का ही दक्षिणी-पश्चिमी विकसित रूप है। इस विकास की अन्तिम सीढी गुजराती है किन्तु उसमे भेदो की मात्रा अधिक हो गई है। राजस्थानी उपभाषा के अन्तर्गत निम्नलिखित चार मुख्य बोलियाँ है :—

मेवाती अहीरवाटी यह अलवर राज्य में तथा दिल्ली के दक्षिण मे गुड़गाँव के आस-पास बोली जाती है।

मालवी इसका केन्द्र मालवा प्रदेश का इन्दौर राज्य है।

जयपुरी-हाड़ौती यह जयपुर, कोटा और बूंदी राज्यों मे बोली जाती है।

मारवाड़ी-मेवाड़ी यह जोधपुर, बीकानेर, जैसलमीर तथा उदयपुर राज्यो की बोली है।

राजस्थानी उपभाषा बोलने वाले प्रदेश मे आजकल खड़ीबोली हिन्दी ही साहित्यिक भाषा है। पुरानी मारवाड़ी बोली मे साहित्य उपलब्ध है। इसे डिंगल कहते है। प्रादेशिक व्यवहार मे महाजनी लिपि का प्रयोग होता है, यद्यपि छपाई मे देवनागरी लिपि प्रचलित है। राजस्थानी उपभाषा बोलने वालों की संख्या लगभग १½ करोड़ है।

पहाड़ी उपभाषा

पहाड़ी उपभाषा हिमालय प्रदेश मे शिमला से नेपाल तक फैली हुई है। इसके अन्तर्गत तीन प्रधान बोलियाँ है :—पश्चिमी, माध्यमिक तथा पूर्वी।

पश्चिमी पहाड़ी यह बोलियाँ सरहिन्द के उत्तर शिमला के निकटवर्ती प्रदेश मे बोली जाती है। इन बोलियों का कोई सर्वमान्य रूप नही है; न इनमे साहित्य ही पाया जाता है।

माध्यमिक पहाड़ी इसके दो मुख्य रूप है :—

१ कुमायूंनी—यह कुमायूं अर्थात् अल्मोड़ा-नैनीताल प्रदेश की बोली है।

२. गढवाली—यह गढवाल राज्य तथा मंसूरी के निकट पहाड़ी प्रदेश मे बोली जाती है।

इन दोनो बोलियो मे साहित्य विशेष नही है। यहाँ के लोगो ने साहित्यिक व्यवहार के लिए खडीबोली हिन्दी को ही अपना लिया है।

पूर्वी पहाड़ी यह नेपाल राज्य मे बोली जाती है, अतः इसे नेपाली, पर्बतिया; गोरखाली और खसकुरा कहते है। इसमे कुछ नवीन साहित्य है। यह देवनागरी लिपि मे ही लिखी जाती है।

पहाड़ी उपभाषा के बोलने वाले लगभग ३० लाख है, किन्तु यह संख्या बहुत निश्चित नही है।

पंजाबी उपभाषा

कुछ लोग पंजाबी को भी हिन्दी के अन्तर्गत स्थान दे देते है। पंजाब

पंजाबी

प्रदेश इस समय भारत तथा पाकिस्तान मे बँट गया है। दोनो भागो मे पंजाबी बोलने वाले लगभग १½ करोड थे। बहुत से पंजाबी भाषी अन्य प्रान्तों मे बिखरे हुए है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से पंजाबी पश्चिमोत्तरी आर्य-भाषाओं अर्थात् लहन्दा तथा सिन्धी से अधिक मिलती-जुलती है। पाकिस्तानी पंजाब में उर्दू साहित्यिक भाषा है तथा भारतीय-पंजाब मे खडीबोली हिन्दी का विशेष व्यवहार है। पंजाबी मे कुछ साहित्यिक रचनाएँ भी हुई है। सिक्ख सम्प्रदाय के लोग इसे गुरुमुखी लिपि मे लिखते है। गुरु ग्रंथ साहब का अधिकांश भाग पंजाबी मे नही है, बल्कि प्रधानतया ब्रजभाषा तथा हिन्दी की अन्य बोलियो मे है।

हिन्दी की उपर्युक्त उपभाषाओं की प्रधान बोलियों तथा खड़ीबोली के आधुनिक साहित्यिक रूपो के उदाहरण प्रस्तुत पुस्तक मे दिये गये है।

Mismatch

ग्रामीण हिन्दी

क. पश्चिमी उपभाषा

१. खड़ी बोली

(क) बिजनौर जिला

कोई बादसा था। साब उस्के दो राण्याँ थी। एक के तो दो लड़के थे ओर एक के एक। वो एक रोज अप्नी रान्नी से केने लगा मेरे समान ओर कोई बादसा है बी ? तो बड़ी बोल्ले के राजा तुम समान ओर कोन होग्गा जेस्सा तुम वेस्सा ओर कोई नई। छोटी से पुच्छा के तुम बी बतला मुज समान कोई ओर बी राजा है के नई ? कि राज्जा मुज्से मत बुज्झो। केह्या[1], नई, बतलाड़ा होगा। राणी ने किह्या कि एक बिजाण[2] सहर हे उस्के किल्ले मे जितणो तुम्हारी सारी हैसियत हैं उत्नी एक ईंट लगी हे। ओ हो इसने मेरी कुच बात नई रक्खी इसको तग्मार्ती[3] करना चाइये। उस्कू तग्मार्ती कर दिया। ओर बडी कू सब राजा का मालक कर दिया।

ब्होत दिन बीच गये कुछ दिन बाद लड़कों ने केह्या कि हम उस सहर को देक्खणा चाते है केसा बिजाण सहर हे। बादसा ने दोन्नो कू इक्का घोड़ा ले दिया। लडके व्हाँ से ब्होत सा माल खुर्जियो मे भर क बेजान सहर कू चल दिये। ब्होत दिन बीच गये खाणा थोडा साई रे गया। एक सराय मे ठैरे थे। जब कुच बी खाणा नई मिला तो घोडे तक बेच दिये। व्हाँ से बिजाण सहर ब्होत दूर था। ब्होत दिन हो गये तब

[1]कहा, [2]बेजान, [3]निरवासित।

तग्मार्ती का लडका बोल्ला के मुज कू एक घोडा लाद्दे तो भाइयों की खबर ले आऊँ के बिजाण सहर गये या नी गये। वो मजल दर मजल चला जा रिया था। जिस सहर मे स्राय थी व्हाई जा पोचा। लडके व्होत तंग हो गये थे। घास बीच-बीच कर गुजारा करे थे।

उसणे भटियारी से क्या केह्या के मेरे घोडे क वास्ते घास ला। भटियारी ने लडको से क्या केह्या कि चलो हमारी सराय मे एक बादसा जाद्दा आया हवा हे। लडका दोन्नो घास लेकर सराय मे आये। उस्कू पता बी चल गेया ता, कि बूज लिय्या था भटियारो से कि के लडके जा रये थे बिजाण सहर। उसणे बड़ी तबज्जे की, और मिठाई ओर पकोड़ी खूब मसाल्लेदार उनकू खलाई। सबेरा हवा तब वहाँ से बिजाण सहर की राह ली। चलते-चलते मजल दर मजल बिजान सहर बी आ लिया। व्हाँ क्या देखता हे के एक हाली हल जोत रिया हे। हात तो उसका हल मे हे बेल वेस्सई सीधे खडे हवे है। जो उस्कू आवाज दी तो बोलेई नी, बिजाण। और वो लड़का बिजाण सहर में पोच लिया है। देखता हे कि चड़स चल रिया हे बेल ठाडे पर खडे हवे है। मलिक चड़स पकड़ रिया हे और जो उन्कू आवाज देता है तो बोल्ते नई, बिजाण। आगे क्या देखता हे कि बात अच्छा बाग हे। तरे तरे की रौस पट्टी पडी हुई हे। फूल लगे हये है। लड़के ने आवाज दी तो माल्ली बोल्ताई नी, बिजाण हे।

व्हाँ से चल क लड़का बिजाण सहर के किले क करीब ई जा पोचा। घोड़ा छोड़ क बादसा जद्दे ने फाटक से बाँध दिया और बिजाण सहर मे चला गया। देखता क्या हे के तमाम सहर विजाण हे। लड़का भूखा था। हल्वाई की दुक्काण कू गेया। लड़के ने हाँक मार्री तो बोल्लाई नी विजाण हे। लड़के ने खाड़ा उठा क खा लिय्या और किम्मत दुक्काण प रखा दी। खाण्णा खा के लड़का व्हाँ से चल दिया। के व्हाँ के बादसाजादी को देक्खणा चइये किस जगे प रेती हे। और सोच्चा किले कि

एक ईंट जरूर ले चलना चइये। अक नमूना दिखावे के बिजाण सहर गेया था। ओर अटारी पंजा बादसाजादी रेती थी व्हाँ गेया। वो पलग प सो रई ती। जो हाँक मारे तो बोल्ली नी, बिजाण। इस्का बी नमूणा कुच ले जाणा चइये। लडके ने अपना रूमाल ओर गुस्ताना उसके हाथ मे पिन्हा दिया ओर उसका लेक्कर अपणे हाथ मे पेन लिया। सब नमूणा ले लिया त व्हाँ से चल देया। उस सहर मे कुछ देव रैवे थे। वो महीने दो महीने मे उसे जान का कर देवे थे सो वो सहर जान का हो गेया।

वे दोन्नो लडके इस्के पेलेई घर पोच गये ते ओर कहा, पिता, बिजाण सहर हम देख आये। वेसेई झूठमूठ कू बता दिया। फिर जब ये छोटा लडका पोचा ओर उस्णे तमाम नमूणा दिखा दिया तब बादसा बड़ा खुस हवा।

फेर जब बादसा-जादी ने रूमाल गुस्ताना देक्खा तो बोली, कै तो उस बादसाजादे से सादी करा दे नई सो बच्चूंगी नाय। उसने पूरा पता बता दिया। बादसा को वो लड़का ब्होत प्यारा लगा ओर सब राज का मालक उसेई बना दिया ओर उस्को लाने को चल देया। बिजाण सहर मे सादी करा क उसी सहर का मालक बणा दिया। फेर बादसा ने उस छोटी रानी की बी भोत आबरू की।

(श्री लालताप्रसाद शुक्ल द्वारा संकलित)

(ख) मेरठ जिला

एक दिन अकबर बादसा नें बीरबल तें पुच्छा, ओ बीरबल तू हमें बडद[1] का दूध ला दे ओर नहीं तेरी खाल कढवाई जागी। बीरबल कूँ बहोत रंज हुआ ओर हुन्तर[2] आण के अपने घरूँ पड रहा।

बीरबल की लोन्डी[3] ने अपणे मन मे कहा की आज तो मेरा बाप

---

[1]बैल, [2] वहाँ से, [3] लड़की

बहोत सोच मे पड़ा हे। आज के जाणे इसका का के ढब हुआ। जिब उन नें अपणे बाप कूं पुच्छा, अरे बाप आज तेरा के ढब हे। बीरबल ने कहा की बेटी कुछ ना हे। फेर लोन्डी नें पुच्छा की पिता अपणे मन का भेद बताणा चाहिए। जिब उननें कहा की बादसा नें कहा की के तो बडद का दूध ला दे नही तझे कोल्हू मे पिलवाऊँगा। मेरे तें कुछ नही कहा गया ओर हाम्मी भर के आया हूँ ओर कुछ राह नहीं पाता। लोन्डी ने कहा कि पिता जी या तो कुछ भी बात नाँ हे। तुक बे फिकर रहो। बीरबल उठ खड़ा हुआ।

खेर, जिब तडका हुआ तो उस लोन्डी ने के काम करा की अपणा सब सिंगार करा और बहोत अच्छी पुसाक पहर के ओर कुछ कपडे हाथ मे ले के बादसा के किले के आगे कूं लिकड[1] जमना पर गयी। बादसा किल पे चढ के जमना की सेल कर रहे थे। अकबर नें देखा कि बीरबल की लोन्डी लत्ते धो रही हे। बादसा ने लोन्डी ते पुच्छा की ए लोन्डी आज क्यो तडके ही तडके लत्ते धोवण आई है। जिब उस लोन्डी नें कहा कि बादसा आज मेरे बाप के लडका हुआ हे। बादसा नें छोह[2] मे आ के कहा अरी लोन्डी भला कही मरदूँ के भी लोन्डे होते सुणे हैं। लोन्डी ने कहा की बादसा भला कही बडद के भी दूधा होता सुणा हे। जिब बादसा कूं कुछ बोल नही आया ओर लोन्डी कूं कह दिया की तडके ही तडके बीरबल कूं कचहडी मे भेज दे।

बीरबल तड़के ही कचहडी मे गया। बादसा न पुच्छा की बीरबल लाया बडद का दूध। बीरबल ने कहा क बादसा सलामत मे तो कल तडके ही लोन्डी के हाथ भेज दिया था। बादसा कूँ कुछ बोल न आया।

---

[1]निकल, [2]क्रोध

२. बाँगरू

झींद रियासत

एक ब्राह्मण था और एक ब्राह्मणी थी। ब्राह्मण चून मैंग-कै[1] लि आया करदा[2]। ब्राह्मणी कैहण लाग्गी इस नगरी मैं राज्जा भोज सै। यू सलोक[3] कोहा कै ब्राह्मणाँ ने एक मका सिग्रोने[4] का दे सै[5]। इस राज्जा के तौ भी जा कै कह दे। बाह्रण कैहण लाग्ग्या मैं सलोक नी[6] जाणदा। बाह्मणी कैहण लाग्गी सलोक तन्नै मैं सिख्या दीगो। फेर उन बाह्मण नै सलोक सिख्या दिया, अक पैस्सा गाँठ मैं।

राज्जा भोज नै सै रोपया उस निग्राम[7] के दे दिया। बाह्मण तो अपणें घराँ चाल्ल्या आया।

राज्जा भोज एक खुर्जी रोपया की भर कै सैल मैं चाल्ल पड्या। चाल्ल्या चाल्ल्या अपणी सुसराड बिग गया[8]। राजा भोज नै एक ल्हवाई की हाट पर डेरा कर दिया। ल्हवाई नै उसकी खात्तर कर दे बार[9] हो गयी। ल्हवाई रोज की रोज राज्ज्जा भोज की रानी की महल मैं जाया करदा। ल्हवाई रानी खात्तर लाड्डू ले जाया करदा। उदन तवल[10] मैं श्रौह लाड्डू भूला गया। ल्हवाई जद कमन्द पर चढण लाग्या राज्जा भोज नै थाप्पी[11], अक तैं भी देख तो, के गियान सै। राज्जा की छोहरी[12] कैहण लाग्गी लड्डू लि आया। ल्हवाई कैहण लाग्ग्या लाड्डू भूल आया। राज्जा

---

[1] मांग के, [2] करता, [3] श्लोक, [4] सोने, [5] देता है, [6] नहीं, [7] इनाम, [8] पहुँचा, [9] देर, [10] जल्दी, [11] निश्चय किया, [12] लड़की,

की बेट्टी ले कै कोरडा ल्हवाई नै पिट्टण मँद गई[१] ।

राज्जा भोज के पल्ले मै चार लाड्डू बंध रे थे । राज्जा भोज नै ओह साफा झरोखे मैं बवा-कै[२] मारा । राजा की बेट्टी कैहण लाग्गी यिह लाड्डू कडै[३] लाइ आए । ल्हवाई-कैहण लाग्या लाड्डू राम ने दए सै । फेर वाह राजा की बेट्टी लाड्डू खाण लाग्गी अर कैहण लाग्गी ल्हवाई ईसी लाड्डू मैं अपणे सासरे मै बिआह तै गई जूँही[४] खाए थे । तेरे को बटेऊ[५] आ रह्या-सै । ल्हवाई कैहण लाग्या, एक बटेऊ मेरे घोडे आला[६] आ रह्या-सै । वाह राजा की बेट्टी कैहण लाग्गी, तन्ने चार सै रोपया दीगी उस बटेऊ नै मरवा दे ।

ल्हवाई उतर कै चार जल्लाद्दा नै बला के लि आया, अक भाई चार सौ रोपया लेओ । इस बटेऊ नै स्याणै मैं[७] जा कै मार देओ । चार जल्लाद्दा ने ओह राज्जा भोज पकड़ लिया । राजा भोज कैहण लाग्या, भाई तम मेरा के करोगे । जाल्लाद बोल्लै, हमे तन्नै जी तै[८] माराँगे । राजा पुच्छण लाग्या, जी तै मारे तन्नै के थियावैगा[९] । जाल्लाद बोल्ले, भाई चार सै रोपया थियावैगे । राजा बोल्ल्या, भाई तम नै रोपया पान सै दिआँगा जी तै ना मारो । थारे शहर मे जिऊँदा नाहीं बड़ूँगा[१०] ।

राजा भोज कै बाह्मण वाला सलोक सात्त[११] आ गिया । अक पैस्सा गाँठ मै था, जो जी बच गया ।

---

[१] पीटने लगी, [२] फेंक कर, [३] कहाँ से, [४] तब, [५] बटोही, [६] घोड़े वाला, [७] जंगल में, [८] जाने से, [९] तुम्हारा क्या लाभ होगा, [१०] आऊँगा, [११] सत्य ।

३. ब्रजभाषा

(क) मथुरा के चौबे

एक मथुरा जी के चौबे हे[१], जो डिल्ली सैहर[२] कौ चले। तौ पैले[३] रेल तौ ही[४] नई, पैदल रास्ता ही। तौ एक डिल्ली को जो बनिया हो सो माल लैकै आयो बेचिवे कौ। जब माल बिक गयौ, जब खाली गाडियै लैकै डिल्ली कौ चलौ[५]। जो सैर के किनारे आयौ सो चौबे जी से भेट है गई। तौ बे चौबे बोले गाडी बारे सै, अरे भइया सेठ, कहाँ जायगी कहाँ की गाड़ी है? वौ बोलो, महाराज मेरी डिल्ली की गाड़ी है और डिल्ली जाऊँगौ। तो चौबे बोले, भइया हमऊँ बैठाल्लेय। बनिया बोलो, चार रुपा लागिंगे भाडे के। चौबे बोले, अच्छी भइया चारी दिगे।

अब चौबे चुप बैठ गये। तौ बनिया बोलौ, 'महाराज कुछ बात कहौ जाते रस्ता कटे'। तौ वे चौबे जी बोले, 'हमारी एक बात एक रुपा की है'। वा ने कई, 'अच्छा महाराज मै दूँगो। तौ कई, 'पैली बात तौ हमारी एई है कि :—

'सब पञ्चन मिल कीजै काज,
हारे जीते आवै न लाज।'

याय सुनिकै बनियौ बोलौ, 'महाराज, मोय तौ कछु या मै मजा न आयौ तुम नै एक रुपा छुडाय लियौ। कई, रुपा की बात तौ इतनी है, फिर तोय संतमेत[६] की सुनामेगे। तौ कई, महाराज ओर कुछ कओ। तौ कओ, सेठ, तेरो एक तौ चुको अब दूसरे रुपा की कएं[७] सू दूसरी निन्नै बात कई कि

'औघट घाट नहियै'।

---

[१]थे, [२]शहर, [३]पहले, [४]थीं, [५]चला, [६]मुफ्त में, [७]कही।

कई, 'मोय मजा न आयो।' कई, जिजमान, मजा की फिर सुनामेंगे, तेरो भाड़ो तौ पूरो कर दें'। कई, महाराज अब तीसरी बात कओ। तौ कई, तीसरी बात जे है कि 'घर मै इस्त्री तै साँच न कहे।' कई, महाराज चौथिओ कै देओ। कई, 'कछु कसूर बन जाय तौ साच कहे, सांच कौ आँच कहूँ नायं। कही, जिजमान तेरो भाड़ो तौ चुक गयो अब तोय सेंतमेत सुनावत चले। फिर बाय रंगबिरंगो बातै सुनावत भए डिल्ली के किनारे तक पौंच गए।

जब दिल्ली द्वै कोस रै[1] गई तब ज़िजमान को गाँव आयौ। सो चौबे जो तौ उतर पडे। जब कोस भर अगाडी और चलो तौ एक गॉव और आयो मा तै[2] डिल्ली कोस भर रै गई। व गाउं मै कैसी भई कि एक साधु मर गओ। तौ गाउं वालिन नै कही बिचार कियौ कि याकौ जमुना जी मै फिकवाय देयं तौ याकी मोच्छ है जाय। तौ सब लोग या पड़े[3] मै ठाड़े कि कोई खाली गाडी आय जाय तौ याय डिल्ली भिजवायं देअं। इतनेई मै जा बनिये की गाडी चली आई। तौ गाव वाले आदमी बोले कि तेरी खाली तौ गाडी हैयै, तू या साधू को लै जा, याकी मोच्छ है जांयगी। वौ बनिया बोलो मैं ऐसे इल्जाम वाले मुर्दा कौ नई पटकौ। गाउं वाले बोले, तोय बडो पुन्न होयगो। इल्जाम की कहा बात है।

तौ मोयं (बनिये को) चौबे जो की बात याद आई 'सब पंचन मिल की जै काज, हारे जीते आवै न लाज'। तो मैने वाकौ बैठाल्लियौ, मेरो कहा बिगडैगो, धर्म को मामलो है। जब मै बाय लैकै तौ मोय दूसरी बात याद आई चौबे जी की कि, 'औघट घाट नहियै'। तो मै बाय औघट घाट लै गओ जा कोई देखै नायं। तौ मै बाय उठाऊँ तो उठै नायं, मरे मै तो बडो बोझ है जाय। सो मैने हात पांय पकड़ कै खैचौ जी वाकी धोती खुल

---

[1] रह, [2] वहाँ से, [3] प्रतीक्षा

गई। धोती के खुलत खन[1] सौ असर्फी निकरी। जी मैं न लाउतो तो का से निकर्ती और चौगान कै घाट पै लै जातो तौ सब कोइ देखतौ। वा काऊ नई देखौ। अब मैंने साधू को तौ घसीट कै जमुना जी मै फेंक दियौ और गाड़ी धोय लीनो और जल्दी के मारे असर्फी की बासनी[2] भूल कै चल दियौ। जब थोडी दूर आयौ तौ याद आई कि बासनी तौ ह्वाई भूल आयौ। लौट कै आयौ देखौ तो ह्वांई धरी अब है बड़ी खुसी होत भयौ घर आयौ।

अब घर मै आयौ तौ रात मे लुगाई सै बात भई तौ लुगाई[3] से साच कै दीनी। सबेरे मै तौ दुकान पै चलो गयौ और लुगाई से पास पडोस मै बात भई तौ वानै कै दीनी कि मेरो धनी[4] एक साधू की सौ असर्फी लायौ है। सो वा बात फैलत बास्साह के पास जाय पौंची। सो बास्सा नै सेठ कौ पकडि बुलायौ। अब सेठ कॉपज्जाय[5] और जात जाय। अइ जौ चौबे जी की चौथी बात साची होयगो तो बच कै आउंगो। बास्साह के सामनै हाजिर भयौ। बास्साह बोलो, ऐ रे बनिया तू कहाँ मे लाया सच कहेगा तौ छोड़ दिया जायगा नही तौ मारा जायगा। बनिया बोलो, हजूर सच कहूँगो आप जो चायं[6] सो करै। वानै सगरी[7] कथा कई और कई कि मै काऊ कौ मार कै नई लायौ, हजूर मोयं तौ चौबे जी की बात का मिल्यौ अब आप हजूर मालिक है। बास्सा बौले, तैने सच कह दिया जा तेरी मा का दूध है, ले जा।

(खिलन्दर चौबे)

---

[1]खुलते ही, [2]कमर में लपेटने की थैली, [3]स्त्री, [4]पति, [5]कॉपता जाय, [6]चाहें, [7]संपूर्ण।

(ख) एटा जिला

एक ठाकुरु हो[१] बा ने एक कोरिया कूँ बेगार मे पकरो और अपनी घुड़िया के संग बाइ लिवाइ के अपनी सुसरार कुँ चलो। तब कोरिया की मैतारी[२] नें कही कि बेटा जब ठाकुर खुसी हो तब अढ़ाई सेर रुई माँग लीये। कोरिया ठाकुर के संग चल भयो।

जब ठाकुरु ससुरार मे भीतर गओ, कोरिया कूँ अपनी घुड़िया थमाय गयो जताइ गओ कि जाइ चोट्टा[३] न लै जामे। आधी रात भये कोरिया सोइ गओ। घुड़िया चोर ले गये। धौताये[४] बा ने देखो तो घुड़िया न पाई। लगाम लै कें अटरिया मे जा जग्गै[५] ठाकुरु सोवत हे पोचो और कही कि, ओ ठाकुरु सा 'अटलन-खुनखुन' तो मो पैं है 'हुन हुन' का तुम लै गये हो? जो सुनि ठाकुरु उठि के ढूढबे कूँ भाजे। कोरिया बिन के संग लगि लओ।

राह मे एक नदिया परी ठाकुर नें कोरिया कूँ अपनी तरबार गहाई दई[६] और कही कि मेरे संग उतरि आ। जब बीचो बीच पौचो तरबार मियान मे तें निकरि परो। कोरिया ने कही, ओ ठाकुर सा जामे सूँमिगी[७] निकरि परि और चोकली[८], मो पै रहि गओ। ठाकुरु ने कही कि काँ गिरि परी? तब बा कोरिया ने नदिया मे मियान फेंक के बताओ कि वाँ गिरो है। मियान हू बह गओ। जा पै ठाकुरु खूब हँसे!

कोरिया ने, हात जोर के कही भले ठाकुरु, अम्मा ने अढाई सेर रुई माँगी है।

[१]था, [२]माता, [३]चोर, [४]सुबह, [५]जगह, [६]पकड़ दी, [७]मींग [८]छिलका।

४. कन्नौजी

(क) कन्नौज

एक दिन का भओ कि हम अपने दुआरे ठाढे रहै औ एक अँधरो फकीर सडक पर भीख मागि रहो हतो कि एत्तेह मे एक मोटर निकसो। मोटर वाले ने आदमी क सामने देखि के कहयौ दांह भोपा बजाओ लेकि वउ तउ अँधरो आदमी कहिका का सुझाई परै कि कै छोर धांइ मोटर है? ऐसो कुछ भओ कि जिछोर जिछोर वउ अपनी मौटर घुमावै वैछोरै वैछोर वहु फकीरउ घूमि परै। हिया तक कि मोटर बिलकुल्लि वहि के तीर आइ गई।

तब मोटर वाले ने एक बारगी मोटर रोकि दई और वहि मे से एक आदमी उतरो औ फकीर क डाटन लगो कि हम एत्ती देर से भोपा बजाइ रहे तुम्हे तनिकौ सुनाइउ नाई पर्ति है जो हम मोटर रोकि न लेत तौ ठउरई मार चाते। वउ फकीर बड़ा झगड़ी रहै। मोटर वाले से कहन लगे कि तुम्हई आखी खोलि कै चलाओ करौ हम तो अंधरा हई है। अभइँ जो हम मरि जाते तौ तुमसे हियई पर दुइसै रुपिया धराइं लेते।

(श्री बलभद्रप्रसाद मिश्र द्वारा संकलित)

(ख) कानपुर जिला

याकै[१] हते[२] राजा बीर बिकरमाजीत। तिन-के याक रानी रहे[३] उइ राजा औ रानी माँ बाजी लागी कि याक चिरैया बोलति रहै। तौन राजा तौ कहत रहै कि हंस बोलतु है, औ रानी कहती हती कि कौनवां[४] बोलतु

[१]एक, [२]थे, [३]थी, [४]कौवा

हुई है। ऐसी हुज्जत रहै कि वहै चिरैया पेंडे[१] पै से उड़ि भाजी तौ कौनवै निकलो। तब तो सरमाय कै राजा रानी कइहाँ निकारी दीन्हिनि।

रानी के उइ राजा ते अढ़ाई महीना को औधान[२] हतो। उइ रानी का चलत याक मडैया[३] मिली तौन तया केरी[४] मड़ैया कहावति हती। तौने माँ जाय कै रही जाय, औरु मड़ैया माँ टटिया लगाय लीन्हेनि। जब थोरी बिरियाँ माँ तया उइ मड़ैया के नेरे आये तब कहन लागे कि ई मड़ैया माँ लरिकिनी होय तौ लरिकिनी और लरिका होय तौ लरिका होय। तब वहि माँ से उइ रानी ने जवाबु दश्रो कि हम फलानी अहिनु औरु अपनु सब बिथा तया से कहि डारी। तया वाहि की लरिकिनी ही की नाईं रच्छा कीन्हेनि।

फिर नवमे महीना माँ उइ रानी के एकु लरिका भश्रो जब वहु लरिका बडो भश्रो तब औरे लरिकवन माँ खेलिबे का जान लगो और जब अनुवादु[५] करै तब उइ लरिकन ते सौगन्धै खाय कि हम ऐसे नाही करो है। तब सब लरिकवा वहि के धौल मारै। तब फिर हर दाँय तयैको सौगंध खाय औ कहे कि हम अनुवादु नाही करो हैं। आखिर का उइ सब लरिकवा वाहि से कहै कि अपने बाप को नाउँ बताव। तब वहि ने तयै को नाउँ बता दश्रो। तब फिर उइ लरिकवा वहि से कहै कि, धा ससुर तयै की सौगन्ध खाति है और तयें का बापु बनावति है औरु वैसे तौ तया केरी गुलानु है।

तब फिरि महै[६] सरमाय करि के अपनी मैया से बापु को नाउँ पूछो। तब वहि की मैया ने बापु को नाउँ बिकरमाजीत बताय दश्रो। दूसरे दिन बिकरमाजीत की सौगन्ध खाई। तब उइ लरिकवन वहि से कहो कि, ससुरऊ औरौ कबहूँ बिकरमाजीत को नाऊँ सुनो है कि अबहीं जानत हौ ?

---

[१]वृक्ष, [२]गर्भ, [३]कुटी, [४]साधु की, [५]शरारत, [६]बहुत।

तब फिर ई सरमाय गयो औरु अपनी मैया से कहो जाय कि हम अपने बाप के तीरा जैबे और कहिकै चलो गओ ।

जाइ कै इह देश माँ पहुँचो जाय । हुवा याक कुआँ माँ पानी भरती हनी । उन ते कहो कि हमका पानी पियाउ देउ । कहन लागी कि पियाय देती हनु । तब फिरि वहि ने कहो कि हम का जल्दी पियाय देव । तौ उइ कहन लागी, ऐसे जल्दी हो तौ कुआँ माँ कूद परौ । तब कूदि परो । तौ वहि माँ देखो कि वाक वहि माँ बहुतै नीकि लरिकिनी दैन्तुर केरी[1] बैठी है । तौन दैन्तुर बारा कोस इंगे[2] औरु बारा कोस उंगे[3] मानुस केरी महँक तक नाही राखति रहै । तौन मानुष की महँक पाय कर लरिकिनी से पूँछौ कि ह्याँ मानुष की महँक जानि परति है । लेकिन वहि ने भुनगा[4] बनाय कै लुकाय रखो ।

जब दैन्तुर चलो गओ तब भेदै भेद उइ लरिका ने लरिकिनी ते उइ दैन्तरे केरे मरिबे की जुगुति पूँछि लई औ ओही जुगुति ते वहिका मारि डारो औरु वहिका ओही कोनवाँ से[5] ऐंचि लाओ औरु वहि के साथ बिआइ करि लओ औरु बिकरमाजीत कौ लरिका बनि गओ ।

---

[1]दैत्य की, [2]इधर, [3]उधर, [4]एक छोटा कीड़ा, [5]कुएँ से

५. बुंदेली

(क) झाँसी जिला

एक गाँव के माते[1] की छोर[2] के ढिगाँ एक गरीब किसान की खेती ठाढा ती ताखो[3] लख के[4] माते बोलो कि काय रे, हमारी खेती अपने ढोरन सें चरा लयी, तोखो देख नयी परत कि हम रखवारी करे है ? किसान बोलो कि माते कक्का, ढोर[5] तो मेरे भुन्सारे[6] से हारे बरेदी[7] लइ गओ। माते ने सुन के कयी कि काल तेरो बाप हमारी फिराद के लाले[8] चऊतरे[9] जात तो। किसान ने जुआब दओ कि बाप मेरो तीन मइना से परदेश मे है। तब माते ने कयी के तो तेरी मतायी[10] हुए। किसान बोलो, मतायी मेरी बेजोरी[11] से मर गयी। तब मै नन्नौ[12] हतो। बा की मोखो खबर नइय्या। माते ने दौर के वाखो तीन चार लातें ओर गर्तकिन से[13] भौत मारो। फरेब से सबरी[14] खेती बाकी काट के अपने ढोर सो चरा लयो और कयी के जो तै फिराद के लाने राज मे जैबे तो हमीरे गाउँ मे बसन न पेहे।

किसान हार सो[15] अपने घरे आओ ओर अपने मानसन मे माते की सबरी हकीगत कयी। तब सब की सम्मत भयी के चलो राज मे फिराद करें। हुना हाकिम के आँगे सबरो ठीक हो जेहे। और जो मोगे[16] बैठे रहै तो गाओ मे निब्बोगड़ी दारें हुहे[17]। तब किसान सब की मुँह को

---

[1]मुखिया, [2]खुदाकाश्त, सीर, [3]उसको, [4]देख कर, [5]जानवर, [6]सुबह, [7]चराने वाला, [8]शिकायत करने, [9]कचहरी को, [10]मा, [11]बीमारी, [12]छोटा, [13]घूसों से, [14]सब, [15]खेत, [16]चुप, [17]रहना मुश्किल हो जायगा।

कुदाई[१] हेर के बोलो कि सुनो भइय्या तला मे[२] रेइ्-के मगरा सो बैर करबो भलो नाइयाँ, श्रोर श्रब तो हमने जा ठान लयी कि खेती पाती जा गाँव मे न करें। बनजी भोरी[3] कर के श्रपनो पेट भरहे श्रोर श्रपनी मडय्या मे डटे तो रेहे।

बा बेरा हुना मुत के[४] मान्स जुरे ते। किसान को बातें बेन के मोंगे हो गये। उनमे से एक जने ने कयी की सुनो भैय्या जबर फरेबी के श्राँगें निबल बे श्रपराधी को बात काम नई श्राउत, ता सें भइय्या गम खाश्रो श्रोर श्रपने घरें बैठ रश्रो।

(ख) श्रोरछा रियासत

एक बेरे एक हाँथी मर गवो तो[५]। जब ऊ कौ जी[६] जमराज कै गवौ। तो उननै पूँछी कै तै इतनौ बड़ौ है श्रौर श्रादमी जो इतनौ हलकौ, ऊ के बस मै काये रात[७] ? हाँथी कौ जी बोलो कि तुमै मुरदन सै काम परत है, श्रबै जिदन सै काम नही परो। जमराज सोचे कि जिदा कैसे होत हू है। श्रपने जमदूतन खाँ[८] हुकम दवो कि जाव सिसार सै एक जिदा लै श्रावो। वे गये श्रौर एक मुसद्दी[९] कौ लै श्राये जो श्रपनी खाट मे सब श्रपनें कागद श्रागद धरें सोवत तो। जम जमपुरी मे पहुँचे तौ मुसद्दी खाँ एक जागाँ[१०] उतार दवो, श्रोर श्रापुन जमराज कै गये।

इतनै बीच मै मुसद्दी नै उठ कैं श्रपनें सब कपडा पहिने श्रौर एक परवानौ बिसनु को कचहरी की लिखो कि जमराज खारज, व सिवराज[११] बहाल, श्रौर त्यार होकै बैठ रहे। जब जमराज के सामने गया तब झट परवानौ उनै दवो। जमराज नै परवानौ देखत-नइ सब श्रपनी जागाँ कौ

---

[१] बातों की वीरता, [२] तालाब में, [3] तिजारत इत्यादि, [४] बहुत से, [५] मर गया था, [६] जीव, [७] क्यों रहता है, [८] को, [९] लेखक, मुंशी, [१०] जगह, [११] मुसद्दी का नाम।

काम सिवराज खाँ सौपो और अपुन बिसनु कै गये और बितवारी करी कि मासै का काम बिगरो कि मै बरखास कर दवो गयो।

इतनै बीच मैं सिवराज नै अपनै हेती व व्यवहारी मिरत लोक सै बुला कें खूब सुख करो और फिर उतई पठवा दवो। बिसनु जमराज खाँ संगै लै कै सिवराज के पास आये और बोले सिवराज सै कि तुम नै अब खूब काम कर लवो है, और फिर सिवराज खाँ मिरत लौक मै पठुवा दवो, और जमराज सै कही कि देखौ जिंदा कैसे होत है। फिर जमराज खाँ उन कौ काम सौप कै अपनै लोक खाँ चले गये।

ख. पूर्वी उपभाषा

६. अवधी

(क) प्रतापगढ़ जिला—पूर्व

एक अहीर के घरे माँ चार मनई लरिका, सास, पतोहू और बाप रहत रहे। मुला[1] चार्यू बहिर रहे।

बेटौना एक दिन खेते माँ हर जोतत रहा औ ओही ओरी से दुई राही चला आवत रहे। वै बेटौना से गुहराई कै[2] पूछिन कि हम रामनगर का जावा चाहित अहै कौनी डगर से जाई? तौऊ अहिरवा जानिस कि हमरे बरधन का पूछत अहै कि बेचब्या? औ गोहराय के कहिस कि बरधवन का हम न बेचबै। यहि पर रस्तागीरै गुहराइ कै कहिन कि हम का बैल न चाही, रह्या[3] औ जानत हुआ तौ लखाई द्या[4]। तौ ऊ जानिस कि सौ रुपैया बरधन कै लगावत अहै। औ गुहराइस कि राजू, सौ रुपैया काव जौ दुयू सौ देत्यो तबहूँ हम आपन बरधवन तुहै न देइत।

कछुक बेर माँ ओह के महतारी रोटी वहि के बरे लौई। रटया खाती बेरा बेटौना बोला माई हो, आज दुई मनई बरधवन के सौ रुपैया देत रहे। मुला हम कहा कि दुई सो का हम न देबै, सौ रुपैया कौन चीज आटै। महतरया बोली कि हाँ बच्चा हम हूँ जानित है कि सागे माँ[5] लोन[6] आज सेवाइ[7] हुई गवा अहै। मुला जौन कुछ होइ तनी तुनी ऐसिन खाइ ल्या।

---

[1]किन्तु, [2]बुलाकर, [3]रास्ता, [4]दिखा दो, [5]साग में, [6]नमक, [7]अधिक।

लौट के जब घरे आइ तौ पतोहिया से[१] कहिस कि लोन सागे माँ अस सेवाई कै दिहे कि बेटौना से रोटी नाही खाइगै। तौ ऊ कहिस कि बासन[२] दै कै मै मिठाई कब लिह्यो रहा। दादा जौन दुआरे पर बैठ रहत है चला तिन से हजुराई देई[३]।

दूनो झगरत झगरत जौ दुआरे पर आई तौ पतोहिया ससुर से बोली कि का हो, तूं हमै बासन दै के मिठाई लेत कब देखे रह्या ? तौ ससुरवा बोला कि गोरू चरावै तौ तूंजा और लाठी हमसे पूछब्या ?

(ख) प्रतापगढ़ जिला—पश्चिम

याक घरे माँ कथा कही जात रही। पण्डित जौन कथा कहत रहें सगरे गाँव का न्योतिन रहे। सुनवैयन माँ याक अहिरौ आवत रहै। ऊ कथवा सुनती बेरा रवावा बहुत करै, औ पंडितौ वहि का प्रेमी जान कै वहि का नीकी तना बैठावै और खूब खातिर करै। याक दिना पंडितौ पूंछिन कि राउत, तूं रवावत बहुत हौ, तुम का काउ समझ परत है ? तौ अहिरवा औरौ सेवाइ[४] रवावै लाग औ कहिस कि महाराज मोरे याक भैंस बिआन रही। कुछ बगद गावा[५] औ ऊ बहुतै बेराम[६] हुई गै, औ पडौना का[७] नेकचाइ न देत रही[८]। तो पडौना दिना भर चिच्यान औ साँही जूनि[९] मरगा। तौन पंडित, वहै कै नाई तूं हूँ दिना भै चुकरत रहत हौ[१०] मै का डेर लागत है कि कतहूँ तूं हूँ न ओकरी नाइ[११] मर जा।

---

[१]बहू से, [२] बर्तन, [३] पुछवा दूँ, [४] अधिक, [५] बिगड़ गया, [६] बीमार, [७] बच्चे को, [८] निकट नहीं आने देती थी, [९] संध्या समय, [१०] बोलते रहते हो, [११] उसकी तरह।

७. बघेली

माडला जिला

कोई देश मे कोई बैपारी एक भारी तालूका केर मालिक बन कर ओमे सुख वैन से रहत रहै। ओ कर[1] तीन ठुन मीत रहै[2]। ओ मे से दुइ झनला[3] खूब मोह करत रहै और दुइ झन से तीसर मीत ओकर से खूब मोह राखत रहै। और ओ ओ ला[4] तलक[5] मोह करत रहै। और ऐसन होत रहे कि आँगू जब ओकर दुइ मीत बैपारी केर भलाई और माया मे मगन होत रहै तब तीसर मीत फिकर मे हुइ के ऐसन बूझै कि मोर अ बैपारी काहिन काज गुस्सा भइस है।

पछारी ऐसन भइस कि बैपारी कोनो बात में राजा के ढिगा कसूर मै झुक गइस[6]। तब राजा ओ ला बोलाइस कि बैपारी मोर ढिगा आय के ओ बात केर जुवाब देय। ऐसन बात राजा केर बैपारी सुनकर खूब डराइस और सोचन लगिस कि असना[7] दुख संकट मे कस ना करूँ। मो से बडा चूक भइस है कैसे राजा के आँगू मतंक[8] रहैला परही, और भगेला जुगत निह बनय। और राजा धरमी और न्याय छनइया[9] होही, तो मो ला यह चूक मे बिना दुख सजा दये दिह मान ही। एक जुगत है जो मोर मीत है उनी ला संग लै जहूँ, उन मोर न्याव के बीच माँ बोलही, और राजा से कहही कि राजा महाराज अब की चूक ला समोरवले[10]। और मो ला दुख सोच से बचाही। तो कौन जाने राजा ओ कर सुन लेय और मोय ला सजा झंप दवाबे[11]।

---

[1]उसके, [2]मित्र थे, [3]जनों से, [4]उससे, [5]कम, [6]फँस गया, [7]ऐसे, [8]चुप, [9]न्यायी, [10]क्षमा कर दीजिये, [11]माफ कर दे।

तब बैपारी आपन मीत ला बोलाइस और ओ ला ये हाल बताइस और हाथ जोरिस बिनती करिस कि भाई, राजा कहाँ[१] मोर संग चल और और मोर तरफ से राजा से बिनती करके मोर जीव ला बचाय ले। तब वह ओ ला कहिस की भाई यह तोर असल जुगत है। मै राजा कि ढिगा तोर संग निह जाऊँ। मै कौन मुँह लय के जाहूँ और राजा ला बिती करहूँ। राजा मोर ऊपर गुस्सा निह करही ? कसूर चूक मे तुही झुके हस, अकेले तुम्हीं जा, मै निह जाऊँ।

बैपारी यह गोठ[२] सुन के ज्यादा दुख मे वैहाघाई[३] हूय के विचारन लगिस हाय मै जनो कसना करूँ मै दूसरा मीतला बोला हूँ। ओकर भरोसा है वह मोर संग राजा कहाँ चलही। तब दूसर मात ला बोलाइस, और ओकर दूसर मीत आइस, और ओला सब हाल बताइस। तब वा ओला कहिस, अच्छा है मै चलहूँ। मीतकेर गोठ बैपारी सुनकेर खुशी भउस और उन दानो झन एकई संग उठिके रीग दीइन[४] जग गाँव के फटका ढिगा[५] पहुँचिन तब बेपारी केर सगी मीत ओला कहन लगिस कि भाई अब डराथूँ। राजा के आगू मै काहिन बताहूँ। कहूँ राजा मोर गोठ के सुन के मोला गुस्सा होय। कहूँ मोला सजा दबावे। मै घरला मुरके जाहूँ। तो संग निह जाऊँ। ऐसन बताय के भग दीइस।

बैपारी जब असना देखिस तो अपन ऊपर साँस लेन लगिस और आह मारन लगिस कि हाय-हाय जिन ला मै मीत जानत रहो और खुशी और आनन्द के दिन मे मो से बड़ा प्रीत राखत रहे अब दुख मे मोला छोड़ दीइन। भगत देव असना छलील ला[६] मोर एक मीत और है ओला बोलाये ला मुस्किल है। काहे से कि ओला मै नीच जानता रहो। ते कर लये वह मोर सहाँव[७] निह होही। मोला[८] और कोई जुगत

---

[१] के निकट, [२] बात, [३] बेहोश, [४] चले, [५] फाटक, [६] छलियो को, [७] सहायक, [८] किन्तु।

तो सूझ निह परै । मै ओकर ढिगँ जाहूँ । कहूँ मोला वह उदास और रौवत देख केर ओकर मन घुट जाय और दया करय मोर बिनती ला सुन लेय । तब ओकर ढिगा बैपारी गइस और सरमाय के वह आँखन मे आँसू भर के कहिस ए प्यारे भाई, दया करके मोर चूक ला समोख ले । मोर असना[1] हाल है । दया करके आव और राजा से मोर पुकार करके मोला बचाय ले । ओकर तीसर मीत दुख केर बात सुन के कहिस कि भाई तोर आये से मोला बहुत खुसी भइस । मोर और तोर आँगू के बात ला जान दे, कोई बात ला झय घोख[2] मै सब दिन तोर ऊपर माया[3] करत रहों । अब मोला जहाँ लग बन परही तहाँ लग तोर भलाई करहूँ राजा मोर चिन्हार है ।

सो वे दोई झन राजा ढिगा रीग दीइन । और ओह राजा से पुकार करिस । ओकर पुकार राजा सुन लीइस । और बैपारी ला अपना ढिग बोलाइस । और सजा केर बदली माँ ओला माया करिस ।

---

[1]ऐसा, [2]न याद कर, [3]प्रेम ।

८. छत्तीसगढ़ी

विलासपुर जिला

एक ठन गाँव माँ केवट और केवटिन रहिस। तेकर एक ठन लइका[1] रहिस। केवट हर महाजन के रुपिया लागत रहिस। तब एक दिन साव रुपिया माँगे बर आइस। तब सियान मन[2] घर माँ न रहॅय। लइका घर राखत बैठे रहय। साव हर पूँछिस कस रे बाबू[3], तोर दाई ददा मन कहाँ गए है। बोतेक माँ टूरा हर[4] कहिस के मोर दाई गए हैं एक के दू करै बर, और ददा हर काटा माँ काटा रूँधे बर गये हैं। तब साव हर[5] कथय, के कैसे गोठियात हस[6] रे टूरा ? तब टूरा कथय, मैं तो ठौका[7] गोठियाथौं। ओतेक नॉ टूरा के औ साव के लराई भय गय। साव रह कहिस के तैं जौन बात ला गोठियाये हस तौन बात ला सिरतोन कर दे[8]। नही करबे तो तोला साहेब के कचहरो माँ ले जाबो। तब तोला सजा हो जाही। टूरा हर कहिस मोर दाई ददा मन जतका तोर रुपिया लागत हैं तेलो तैं छाँड देवे तब मैं ये कर भेद ला बता हौ। ओतेक माँ सावहर कहिस के भेद ला नही बताबे तौ तोला कैद करवा देहौ। तब टूटा हर कहिस हौ महाराज चल। साहेब लॅग चलो।

केवट के टूरा औ साव दूनो झन[9] साहेब लँग गइन। साहेब लँग साहहर फरियाद करिस के महाराज मैं आज बिहनिया[10] केवट क घर गयौ तब केवट और केवटिन घर माँ नहीं रहिन। वोकर रहिस तब मैं

---

[1]लड़का, [2]बड़े लोग, [3]ऐ लड़के, [4]लड़के ने, [5]साहूकार, [6]बोलता है, [7]ठीक, [8]सच साबित कर दे, [9]जन, [10]प्रातः।

बो-ला[1] पूंछेव के कस रे बाबू, तोर दाई ददा मन कहाँ गये है। तब ये टूरा हर कथय कि मोर दाई गये है एक के दुइ करे बर, और ददा गये है काटा माँ काटा रूँधे बर। तब येकर औ मोर लराइ भय गय। येकर मोर हार जीत लगे है। येकर नियाव ला कर दे, ये हर जैसन गोठियात हवै। साहेब हर टूरा ले पूँछिस ये कस रे टूरा येकर भेद ला बतैबे। टूरा कहिस, हौ महाराज साव हर सबो रुपिया ला छाँड देही ना महाराज। वोतेक माँ साहेब हर साव ला पूँछिस के येकर भेद ला टूरा हर बताय देही तो सबो रुपिया ला छाँड़ देवे ना। साव कहिस हौ महाराज। औ नाहीं बताही तो सजा हो जाही न महाराज? साहेब कहिस अच्छा तुम मन चुपे चुप ठाढ़े रहा।

साहेब टूरा ला पूँछिस, कस रे टूरा तै कैसे सावला[2] गोठियाये। टूरो कहिस मैं ऐसन गोठियायो के साव पूँछिस के कस रे बाबू तोर दाई ददा कहाँ गये है? तब मै कह्यौ के मोर दाई गये है एक के दुई करे बर, और ददा गये है काटा माँ काटा रूँधे बर। सुना महाराज, मोर दाई गये है चना दरे बर। तब एक ठन से दू दार होत है। येकर भेद इया भय महाराज। दूसर बात ऐसन अय के मोर ददा हर काटा बारी माँ काटा रूँधे बर गये रहिस। तब महाराज भाटा माँ काटा होता है। तब मै कह्यौ काटा माँ काटा रूँधे गये हैं। इया साव हर लराई लरिस मोर सँग। साव हर वोतेक माँ बडबड़ाये लागिस। साहेब कहिस, चुप रहो साव। तै तो हार गये। इया टूराहर जीत गइस। टूराहर सिरतोन बातला बतलाइस है। रुपिया ला छाँड दे।

[1]उससे, [2]साहूकार से।

ग. बिहारी उपभाषा

९. भोजपुरी

गोरखपुर जिला

एक जनी अहिर ससुरारि करै गइलै। उहाँ राति के दीआ बरत रहै[१] इ कब्बो[२] दीया बरत देखले नाही रहलै। अपने मन मे कहलै हो न हो ई अँजोरिया कै बच्चा[३]। जब उनकै ससुर नेग बिदाई देबै लगलै, त ई है कहलें, ए राउत, हम लेब त अँजोरिया कै वच्चै लेब। ससुर दे दिहलै। बाकिर[४] इनके मन में तब्बो खटका रहल। राति के जब सब सूत गैल[५] तब ई दीआ छान्ही[६] के नीचे चोरा दिहल। घर मे आगि लगि गइल। सज्जी[७] धन दौलत बिलातिला गइल[८]। इहो रोए लगलै, हमार अँजोरिया कै बच्चा ओही मै जरि गइलै! सब लोग जानि गइलै कि इहै सार घर फुकलसि है।

(सरवरिया)

---

[१]चिराग जलता था, [२]कभी, [३]उजियाली अर्थात् चाँद का बच्चा, [४]किन्तु, [५]सो गये, [६]छप्पर, [७]सब, [८]नष्ट हो गयी।

१०. मगही

गया जिला

बाघ हुँडार[1] और कैदुअा[2], एक बेरी ई तीनों मिलकें आप०नन मे मत मेराल० कन[3] कि सब मिल के सिकार मारी और फेर अप०नन मे बाँट लिही । ई कह जंगल०वा मे उछ०ले कूदे लगल०थिन[4] । औ जब एगो[5] बड०गो करिया हरिन मार लेल०थिन तब बघ०वा बोल उठलइ कि लाव० एक०रा बाँटिअउ । और तुर०ते ओकर तीन कुट्टी[6] करके हुंभर कर[7] बोल०लइ कि, पहिल कुदिया तो हम लेबउ, काहे कि हम बनके राजा हिअउ, दोस०रो भी हम०ही लेबउ काहे कि एक०रा मारे मे बड मेह०नत कर०ली ह०, और तेसर कुट्टी धरल हउ, तेखिअउ केकर दम चल० हउ कि हम०रा आँगूँ से ले जा ह० ।

ई सुन के कदुआ और हुँड०रा डरा के भाग गेलन और बघ०बा अकेले हरिनिया के खइल० कइ । ई कहतूत सच्चे हे कि जेकर लाठी ओकरै भइँस ।

---

[1]भेड़िया, [2]चीता, [3]मत मिलाप [4]लगे, [5]एक, [6]हिस्सा, [7]गरज कर (बाघ की बोली) ।

सूचना—०से तात्पर्य अर्द्ध अ से है ।

११. मैथिली

दक्षिणी दर्भगा

एगो[१] गँवारि गोआरिनि माथा पर दहेरी[२] धैले चलल जाई रहैय० । चलैत चलैत ओक०रा जी मे ई उमंग उठ०लै, जे ई दही के बेचब, पैसा सै आम मोल लेब । किछु आम हम०रा० जौरे[३] छअ[४] । सभ मिलाई कै तीन सै सै किछु बढि जाइत । ओकरा मे सै[५] किछु सरिपचि जाइत । तब हैं अढाइ सै तै बच० वे । आओर ओहि में से जे बचत ओकर बेसी दाम मिलत । तक दिवारी मे एक हरिअर सारी[६] लेव । हौ हौ हरिअर सारी हम०रा मुँह पर नीक खुलत । आओर बस, हम तै हरिअरे सारी लेब । आओर ऐंठ जैठ कै चलैत मे से सै लच०कत चलब ।

एहि सोच विचार मे ऊ गँवारि गोआरिनि जे किछु चमक ठमक कै टेढ चाल चलब तब दहेरो ओक०रा माथा पर से गिर कै चूर चूर हो गेलै, आओर सौं सो बनल बनाएल घर बिगर गैले ।

---

[१] एक. [२]दही का बर्तन, [३]पास, [४]है, [५]उनमें से, [६]हरी साड़ी ।

घ. राजस्थानी उपभाषाएँ

१२. मारवाड़ी

अजमेर

अमला मै आछा लागो, म्हारा राज !
पीवो-नी दारु-ड़ी[१] ॥
सुरथ था-नै पुजस्याँ जी भर मोत्याँ-को थाल ।
घड़ेक मोडा[२] उगजो पिया जी म्हारै पास ।
पीवो-नी दारु-ड़ी ।
अमलाँ मै आछा लागो म्हारा राज !
पीवो-नी दारु-ड़ी ॥
जा एँ दासी बाग मै, ओर सुण राजन री[३] बात ।
कदेक[४] महल पधारसि, तो मतावलो धणराज[५] ।
पीवो-नी दारु-ड़ी ॥
अमलाँ मै आछा लागो म्हारा राज !
पीवो-नी दारु-ड़ी ।
थारी ओलूं[६] म्हे करॉ, म्हारी करै न कोय ।
थारा अलूं म्हे करा करता करै जो होय ।
पीवो-नी दारु-ड़ी ।
अमलाँ मै आछा लागो म्हारा राज !
पीवो-नी दारु-डी ॥

---

[१]हे मेरे स्वामी, नशे में तुम अच्छे लगते हो, शराब जरूर पीओ'
[२]एक घड़ी देर में, [३]राजा की, [४]कब, [५]स्वामी, [६]प्रेम ।

१३. जयपुरी

जयपुर राज्य

एक बाँण्यू छो। रात छो भगत[१] दोन्यूं लो लुगाई घर मै सूता छा[२]। आदी रात गियाँ एक चोर आर[३] घर मे बड गयो[४]। ऊँ भगत मै बाँण्यॉ नै नीद सूँचेत हो गयो। बाँण्यॉ नै चोर को ठीक पडग्यो[५]। जब बाँण्यूँ आपकी लुगाई नै जगाई। जद लुगाई नै[६] कई आज सेठाँ कै दसावराँ सूँ चोठ्याँ लागी छै सो राई भोत मैंगी होली। तडकै[७] रिप्याँ बराबर बकैली। राई का पताँ नै, नीकाँ जाबता सूँ मेल दे। जद लुगाई कई, राई का पाता बारलो तबारी का खूणाँ मै[८] पडचा छै। तडकै ई नोकाँ मेल देस्यूँ।

चोर आ बात सुणर मन मे बचारी राई पाताँ मै सूँ बाँदर[९] ले चलो! ओर चीज सूँ काँई काल छै। जद बो चोर राई का पाताँ की पोट बाँदर ले गियो। बाँण्यूँ देखी, ओर मालसूँ बच्यो। राई लेग्यो। मालसूँ पंड छूटचो। जद दन ऊग्याँई बो चोर राई की भोली भरर बेचवा नै बाजार मै ल्यायो! तो बाजार का पीसा की ढाई सेर का भाव सूँ माँगी। जद चोर मन मै समभी बाँण्यूँ चालाकी करर आपका घर को धन बचा लियो।

---

[१]समय, [२]सोते थे, [३]आकर, [४]घुस गया, [५]ज्ञान हो गया, [६]स्त्री के, [७]बर्तनों को, [८]बाहर बरामदे के कोने में, [९]बाँध।

१४. मालवी

झाबुआ राज्य

एक सरवण नाम करी ने आदमी थो। वणी रा[1] मा बाप आँधा ऊँ आँदा था। सरवण बणा ने तोक्या[2] फरतो थो। चालताँ आलताँ आँदा आँदी ने[3] रस्ता मे तरस[4] लागो। जदी सरवण ने कीदो के बेटा; पाणी पाव। म्हाँ ने तरस लागी। जदी ऊ वणा ने[5] बठे[6] बेठाइ ने पाणी भरवा ने तलाव उपर गियो। वणी तलाव उपर राजा दशरथ की चोकी थी। जणी वखत सरवण पाणी भरवा लागो जदी राजा दशरथे दूरा ऊँ देख्यो। तों जाण्यों के कोई हरण्यो पाणी पीवे हे। एसो जाणी ने राजा ए बाण मार्यो। जो सरवण रे छाती मे लागो। जो सरवण वणी बखत राम राम करवा लागो। जदी राजा ए जाण्यो के यो तो कोई मनख है।

एसो जाणी ने राजा दशरथ सरवण कने गियो। तो देखो तो आपणो भाणेज[7]। राजा साच करवा मंडपो। जद सरवण बोल्यो, के खेर मारो मोत थाणा हात से ज लखी थी। अवे मारा मा बाप ने पाणी पावजो। अतरो केह ने शरवण तो मरि गियौ। ने[8] राजा दशरथ पाणी भरी ने बेन बेनोई[9] हावा ने आयो। जदी आँदा आँदी बोल्या के तँ कूणहे। दश-रथ बोल्यो के थाणे काँई काम हे थें। पाणी पीयो। जदी बेन बोलो मे तो सरवण सिवाय दुसरा का हात को पाणी नी पीयाँ। दशरथ बोल्यो के हूँ दशरथ हूँ। ने गारा हातँ अजाण मे सरवण मरि गियो।

आँदा आँदी सरवण को मरणो हुणी ने[10] हा! हा! करीने राजा दशरथ ने हराप[11] दीदो के जणी बाणू मारो बेटो मारयो वणा ज वाणू तूँ मरजे। एसो हराप देइ ने आँदा आँदी बी मरि गिया।

---

[1]उसके, [2]लेकर, [3]अंधे अंधी को, [4]प्यासा, [5]उनका, [6]वहाँ [7]भानजा, [8]और, [9]बहिन बहनोई को, [10]सुनकर [11]शाप।

ङ. पहाड़ी उपभाषा

१५. कुमांयूनी

अल्मोड़ा

एक समय लच्छु कोठ्यारी[१] नाम आदमी का[२] वज्र-मूर्ख सात पुत्र छिया[३]। वी का[४] मरणा[५] बाद वो[६] अपाणी[७] इजा[८] कन[९] रातदिन खाणा पिणा[१०] सो[११] दिन करन छिया[१२]। आखिर तंग आई[१३] उनरी[१४] इजा उनन कन[१५] छोड़ी[१६] आपणा[१७] मैत[१८] सां जानी रई[१९]। उन कुपुत्रन[२०] न खाण-पिणा बणूणा को[२१] सीप छियो[२२] और न के[२३] प्रकार की सहूलियत।

जब भूख ले[२४] पेट मे हुड़किया नाचणा लगा[२५], तब एतुक[२६] बिसी का सैकडा[२७] हुनी[२८] कै मालूम भयो[२९]। सब भाइन ले[३०] इजा बुलौणा की[३१] राय दी पर बुलौणा सोंजा को[३२]? कोई लग[३३] रस्त मे[३४] डर कर[३५] कारण जाणा सो[३६] राजनी भयो[३७] आपस मे एक दूसरा[३८] कन[३९] दुख को कारण बताई[४०] खूब लड़न छिया[४१]।.गाँव का लोग उनन [४२]एक दूसरा का विरुद्ध और लग[४३] भड़काई दिछिया[४४]।

अन्त मे लड़ झगड़ी[४५] वो[४६] दुष्ट होई गया[४७]।

[श्री कृष्णानन्द जोशी द्वारा संकलित]

---

[१]लक्ष्मीदत्त कोठरी, [२]के, [३]थे, [४]उसके, [५]मरने के, [६]वे, [७]अपनी [८]माँ, [९]को, [१०]खाने पीने, [११]के लिए, [१२]करते थे, [१३]आकर, [१४]उनकी, [१५]उनको, [१६]छोड़ कर, [१७]अपने, [१८]मैके [१९]चली गई, [२०]कुपुत्रों को, [२१]बनाने की, [२२]जानकारी थी, [२३]किसी, [२४]से, [२५]हुड़किया एक प्रकार के गा-गा कर माँगने वाले होते है, अर्थात् भूख अत्यन्त सताने लगी, [२६]इतने, [२७]बीस के सैकड़े, [२८]होते हैं, [२९]करके, अर्थात् वास्तविक बात मालूम हुई, [३०]भाइयों ने, [३१]बुलाने की, [३२]कौन, [३३]भी, [३४]रास्ते में, [३५]के लिए, [३६]न हुआ, [३७]दूसरे, [३८]कों [३९]बताकर [४०]लड़ते थे, [४१]उनकी, [४२]भी, [४३]भड़का, [४४]देते थे, [४५] लड़झगड़ कर, [४६]दे, [४७]हो गए।

१६. गढ़वाली

पौड़ी

एक राजा अर वजीर नौना[१] मा बड़ी भारि दोस्ति छै। एक-दिन दुय्या द्वी[२] जंगल मा शिकार खेन्नु तैगैन[३]। एक मृगा पैथर[४] ऊन घोड़ा छोड देबे पर ऊन मृग तो छौंप सक्यो[५]। वीं दौड़ादौड़ि मा वो रस्ता भूल गिने। रिबड़ते-रिबडते[६] वो थक गिने पर बूंसणि[७] रास्ता नि मिल्वो। दो फरा घामै चटाक जो लगे ताऊँ सणि तीस[८] लग्गे। बड़ी देर तै खोजणा रेनै[९] पर करवी पाणी को बूंद नि मिल्यो। तब दुया द्वी एक पीफला डाला तल[१०] बैठि गिने। वजीरा नौना न बोले कि मौजि मि[११] आपको तै जखन होलो[१२] पाणि खोज तै लौलो[१३] अर वो तब पाणि खोजणू तै चलोगे। राजा नौना सणि पीफल डाला तथा ठंडा बथौ[१४] मा निंद ऐ गे। सिया मा वै का खुट्टा पप गुरौ न तड़ाक मार दे[१५]। वजीरौ नौनौ पाणि ले के श्राये व देखद त राजा नौना पर सानन बाच[१६] जपकाये[१७] जुपकाये पर वे थै होस नी आये। वे न तव राजा नौनो मुंड कोलि[१८] पर धारे और सैरा दिन उखिमु[१९] रोणू राये। स्यामणि दा[२०] महादेव पार्वती जी वीं रस्ता असमान बटि जाणा छा। पार्वति जी न जइ रोणों सूणे त ऊन बोले हे महादेव जी जन्नी[२१] करदाई तै रूँदारा[२२] की विपदा मिटैद्या[२३] तब महादेव

---

[१]लड़कों में, [२]दोनों के दोनों, [३]गये, [४]पीछे, [५]नहीं पकड़ सके, [६]इधर उधर भटकते हुए, [७]को. [८]दोपहर की असह्य धूप लगने पर उन्हें प्यास लग गई, [९]रहे, [१०]तले, [११]भाई जी मैं, [१२]जहाँ से होगा, [१३]लाऊंगा, [१४]बयार, [१५]सोते हुए में साँप ने उसके पैर को काट लिया, [१६]होश न हवाश, [१७]टटोलना, [१८]गोद, [१९]वहीं पर, [२०]शाम के वक्त, [२१]जैसे हो। [२२]रोने वाले, [२३]मिटा दीजिये।

जिन एक बुढ्या बामण को रूप धारे अर वजीरा नौना मु गैने । ऊन वे मा बोले कि सुण वजीरा लड़का जु तुने का घौ[१] पर गिचौ[२] लगै की बिस स सोड देल्यो[३] य यो बच जालो पर तु मर जैलो भैं[४]। वजीरा नौना न महादेव जी सणि वोन्न भी न द्यो अर गिचो लगै दे । महादेव जी भौत[५] खुश ह्वै ने ऊन वे को हाथ पकडे कि ठैर जा मि त्वै से बड़ो खुश छौ[६] अर त्वै सणि वरदान दें दू कि तेरो मित्र बच जालो । इनो वाजी तै महादेव जी अन्तर्ध्यान ह्वै गिने । राजा नौनो चडम[७] खड़ो उठे अपणा दगडया[८] सणी पुछणा बैठि गे । वे न सब हाल लगाये अर तब दुय्या द्वी महादेव जी का बड़ा भक्त ह्वै कि तै घर ऐने । खावन पिवन आनन्द खन[९] ।

[श्री विशंभरदत्त भट्ट द्वारा सङ्कलित]

)

---

[१]घाव, [२]मुँह, [३]चूस जाना [४]मर जावेगा भाई, [५]बहुत, [६]हूँ, [७]एकदम से, [८]दोस्त, [९]रहें ।

च. पंजाबी उपभाषा

नाभा राज्य

इक राजे दे सत धिश्रां सन[1] । इक दिन राजे ने उन्हांनूं आखिया[2], 'धिश्रो तुसी कीदा भाल खाँदीश्राँ हो ?' छीश्राँ नें आखिश्रा, 'श्रसी[3], बाबू तेरा भाग खादीश्राँ हाँ ।' ते[4] सतमी ने आखिश्रा 'मै ता श्रपना भाग खाँदी हाँ ।' ताँ राजे ने आखिया 'मै थोनं[5] किहा जिया पिश्रारा लगदा हाँ ? छीश्राँ ने आखिया, 'तू' साँनूं, [6]खंडबग [7]पिश्रारा लगदा हैं' । ते सतमी ने आखिया, तूं मैनूं नून बर्गा पिश्रारा लगदा है' ।

ताँ राजे ने हरख के[8] आखिया, 'एहनू किसे लँगड़े लूले नाल[9] बिहा देश्रो । देखो फिर किकुँ[10] श्रपना भाग खाऊगी'[11] । ताँ श्रोह इन लँगडे नाल बिहा दित्तो । श्रोह बिचारी लँग नूंखारी विच[12] पाके[13] मँगदी खादी पाई फिर दी । एक दिन खारोनूं इक छप्पड़ ते[14] कडे ते[15] धर के छाप मँगन छली गई । ताँ लँगड़े ने की देखिश्रा कि काले काँ[16] छप्पड विच बडके[17] कग्गे[18] हो हो निकल्दे आश्रोदे इन । ताँ श्रोनादी रीसम रीसी[19] लँगड़ा बी रूढदा पैदा[20]लप्पड विच जा डिग्गा[21] । ते श्रोह नौबनौ[22] हो गिश्रा । ताँ जद श्रो हदी बहु मङ्ग तङ्ग के आई ताँ श्रोह आऊँ दीनू[23] राजी बाजी हो के खड गिया[24] ।

---

[1]एक राजा के सात लड़की थीं, [2]कहा, [3]हम, [4]और, [5]तुम्हें, [6]हमके, [7]शक्कर की तरह, [8]क्रुद्ध होकर, [9]साथ, [10]कैसे, [11]खायेगी, [12]टोकरी में, [13]रख कर, [14]तालाब के, [15]किनारे, [16]काले कौवे, [17]घुस कर, [18]सफेद, [19]उनकी नकल करके, [20]लुढ़कता-पुढ़कता, [21]गिरा, [22]अच्छा, [23]आकर, [24]खड़ा हो गया ।

UNIVERSITY LIBRARY
1 MAY 1967
ALLAHABAD

परिशिष्ट

सा.ि.त्यिक खड़ी बोली

(क) साहित्यिक उर्दू : क्लिष्ट

यह गरीबुद्दायरे ग्रहद[1] व नाग्राशनाए ग्रस्त्र[2] बेगानए खेश[3] व नमक परवर्दए रेश[4] मामूरए तमन्ना[5] व खराबए पसरत[6] कि मौसूम[7] व ग्रहमद व मदऊ[8] बे ग्रबुल्कलाम है सन् १८८८ ईस्वी मुताबिक जुलाहिज्जा सन् १३०५ हिज्री मे हस्तिए ग्रदम[9] से इस ग्रदमे सस्तीनुमा[10] मे वारिद हुग्रा[11] ग्रौर तुहमते हयात से मुत्तहम[12]।

ग्रबे कदम की तेजी ग्रार हिम्मत की चुस्ती वापस भी मिल जाय फिर भी वह दौलते वक्त कब वापस मिल सकती है जो लुट चुकी ग्रौर वह काफिलए उम्मीद वतन[13] पसमाँदगाने गफलत[14] का खातिर लौट सकता है जो जा चुका ?

सुभान ग्रल्लाह, बख्त[15] की फ़ीरोजी[16] ग्रौर तालेग्र की ग्रर्जुमन्दी नीमए[17] उम्र[18] लग्जिशो[19] ग्रौर ठोकरी की पमाली[20] व दरमाँदगा[21] मे बसर हो चुकी नीमे उम्र जो शायद बाकी है दम लेने व सुस्ताने मे खतम

---

[1]समय रूपी देश का पथिक, [2]संसार में ग्रपरिचित, [3]नातेदारो में विदेशी, [4]घावों का पाला हुग्रा, [5]लालसाग्रों का नगर, [6]निराशाग्रों को मरुस्थल, [7]नामक, [8]ज्ञात, [9]ग्रस्तित्वहीन, संसार, [10]प्राकृतिक संसार जो वास्तव में ग्रस्तित्वहीन है, [11]प्रवेश किया, [12]जीवन दोष से दूषित, [13]ऐसे यात्रियों का समूह, जो घर पहुँचने की ग्राशा में चला जा रहा हो, [14]ग्रालस्य के रोगियों, [15]धन्य ईश्वर, [16]भाग्य की सिद्धि, [17]भाग्य का बड़प्पन, [18]ग्रर्द्ध ग्रायु, [19]फिसलना, ग्रथवा दुष्कर्म, [20]कुचलना, [21]थकावट बिमारी या व्यथाया।

हो रही है। न मंजिले मकसूद[1] का पता है न शाहराहे मंजिल[2] पर कदम। जब पाँव मे तेजी और हिम्मत मे जवानी थी तो रहनवर्दी[3] व मंजिल-तलबी[4] का दरवाजा न खुला। अब पामालियो और उफ्तादगियो[5] से न कदम मे पामर्दी[6] रही न हिम्मत मे कारफर्माई[7] तो तलब[8] ने आँखे खोली गफलत ने करवट ली। राहदूर और निशाने मंजिल[9] गुम। कीसए ज़ाद[10] खाली और सरो सामने कार[11] नापैद। वक्त जा चुका और हर आन व हर लम्हा[12] कारवाने मकसूद[13] से दूरी और मंजिल मुराद[14] से मह-जूरी[15] बढती गई।

[मौलाना अबुल्कलाम आजाद, 'तजकिरा']

(ख) साहित्यिक उर्दू : साधारण

बेगम ने देखा होगा दिल्ली शहर मे एक जामा मसजिद है जिसको हमारे दादा शाहजहाँ ने बनाया था। दूर-दूर की खिलकत[16] उसको देखने आती है मगर इसको कोई नही देखता कि मस्जिद की सीढियाँ के सामने फटे हुए बुर्का के अन्दर नातावा[17] बच्चे को गोद मे लिये पेवन्द लगा पाजामा और गठी हुई कन्ने[18] लगी जूती पहिने कौन औरत भीख मागती है। बेगम! यह गरीब दुखिया शाहजादी है जिसका कोई वारिस[19] नही रहा। तुम यकीन करना मेरी रहमदिल वाइसरानी, उसी के बाप शाहजहाँ ने यह मस्जिद बनवाई थी। आज पेट के लिये भीख के टुकड़े जमा कर

---

[1]उद्देश्य, [2]वह पथ जो उद्देश्य तक मनुष्य को पहुँचाता है, [3]भ्रमण करना, [4]उद्देश्य की पूर्ति का विचार, [5]सांसारिक क्लेश, [6]बल, [7]विचार-शक्ति, [8]सब इच्छा अथवा उद्देश्य की पूर्ति का विचार, [9]उद्देश्य का ठिकाना, [10]वह थैली जिसमें यात्रा की सामग्री होती है, [11]कार्य की सामग्री [12]प्रत्येक पल, [13]ध्येय की ओर जाने वाला कारवाँ, [14]ध्येय, [15]वियोग, [16]जनता, [17]दुर्बल, [18]किनारों पर जरी काम की हुई, [19]नातेदार।

रही है ताकि जिन्दगी मस्जिद आबाद करे[1]।

मुझे शर्म आती है मैं तुमसे क्योंकर कहूँ कि यह हजार रुपये बहुत थोड़े है। मरहम के एक छोटे से फाया से क्या होगा। हमारे तो सारे बदन पर जख्म है। तुम्हारी नई दिल्ली की खैर[2] जिसकी सडकों मे लाखो रुपया खर्च हो रहा है। तुम्हारी नई इमारतो की खैर जिनकी वास्ते करोड़ो रुपयो की मंजूरी है, तुम्हारे इस नेक ख्याल की खैर जिसकी बदौलत दिल्ली की पुरानी इमारतो की मरम्मत हो रही है और बेशुमार रुपया इसमे खर्च किया जा रहा है। हमारे पेट की नमुराद[3] सडको की भी मरम्मत हो, और हमारे टूटे हुए दिलो पर भी इमारतें चुनवाओ। हम भी पुराने जमाने की निशानियाँ है। हमको भी जिन्दा आसार कदीम[4] मे लोग समझते है। हमको भी सहारा दो। मिटने से बचाओ। खुदा तुमको सहारा देगा और बचायेगा।

[ख्वाजा हसन निजामी, 'बेगमात के आँसू']

(ग) बेगमाती उर्दू : लखनऊ

अम्मी जान, खुदा करे आप सलामत रहे। बहिन झम्मन साहिब आज लखनऊ मे दाखिल हुई उनसे आपकी सब खैर-ओसलाह मालूम हुई। बड़े मामू का जी आये दिन[5] माँदा रहता है। लखनऊ मे बहुत दवा-दर्मन की मगर कुछ फायदा नही हुआ। कल्ह अगर ऊपर वाला हो गया[6] तो जुमरात[7] को वह जरूर इलाज करने फैजाबाद सिधारेंगे।

आज कल्ह यहाँ चोरो का बड़ा नर्गा[8] है। पडोस मे खानम साहिब

---

[1]अपने पेट को पाले, [2]इस शब्द का मुसलमान भिखारी बहुत प्रयोग करते है। इसका अर्थ है 'भला हो,' [3]असंतुष्ट, [4]भूतकाल, [5]नित्य प्रति, [6]चाँद देख पड़ गया, [7]बृहस्पतिवार को, [8]झण्ड।

के यहाँ कल्ह दिन दहाडे कई चोर घुस आये। बडा गुल गपाड़ा मचा। सिपाही निगोड़े गँवार के लठ, समझे न बूझे। हुल्लड़ सुनते ही हमारे मकान मे दर्रान चले आये। वह तो कहिये बडी खैरियत गुज़ारी। आदमी ड्योढी पर मौजूद था, उसने रोका थामा, नही तो सबका सामना हो जाता। उसमे दो चार पकडे भी गये। मुओ ने हाकिम के सामने उल्टा छुड्डा[1] रक्खा कि खानम साहिब के बेटे ने मकान अवकाने के बहाने घर मे बुलाया। दोपहर बन्द रक्खा, पचास रुपय्यै छीन लिये, उल्टा चोर चोर करके गुल मचा दिया।

नजीर और उनकी बीबी मे रोज-मर्रा झंझट हुआ करती है। नज़ीर की तो जानिये आप एक नकचढा, बीबी भी मिजाजदार, जर्रा जर्रा सी बात पर तू-तू मैं-मैं होने लगती हैं। लाख समझाया "बहिन, कच्चा साथ है। खुदा रक्खे, सियानी लडकी बियाहने लायक पहलू से लगी बैठी है। उसके सामने इस बकबक झकझक, दिन रात के दाँत किल-किल से क्या फायदा"। मगर ऐसी अक्लो पर खुदा की मार। हमजाने में बात के बतंगड़ बढते हैं। कौन दख्ल दे। उल्टा नक्कू बने।

औलाद अली को देखिये। न कोई बात न चीत। बेकार-बेकार भी माँ से लडभिड़ कर दधियाल चली गयी।

बेगम जान का छा महीने का पालापोसा बच्चा परसो जाता रहा। बेचारी एक आँख दबाती है लाख आँसू गिरते है। अभी मियाँ को मरे पूरे चार महीने भी नही हुए थे कि यह आस्मान फट पडा। गरीब की रही सही आस भी टूट गयी।

(घ) साहित्यिक हिन्दी : क्लिष्ट

कविता वास्तव में हृदय का उच्छ्वास, अथवा आनन्दागुलि विलोड़ित हृत्तंत्री के मधुर नाद का शाब्दिक विकास है। यह स्वाभा-

विकता है कि जिस समय मनुष्य के हृदय मे आनन्द-उद्रेक होता है उस समय अनेक अवस्थाओ मे केवल वह कंठध्वनि द्वारा ही उस आनन्द का प्रदर्शन करता है। किसी किसी अवस्था मे उसके मुख से कुछ निरर्थक शब्द निकलते है और वह उन्ही के द्वारा अपने हृदयोल्लास की परितृप्ति करता है। कभी वह सार्थक शब्दों की कहने लगता है और इनको इस प्रकार मिलाता है कि उसमे गति उत्पन्न हो जाती है और वे छन्द का स्वरूप धारण कर लेते है। बालकों को, उन बालकों को जो खेल-कूद मे मग्न अथवा उछल-कूद मे तल्लीन होते है। हम इस प्रकार का वाक्य-विन्यास करते देखते है जिनका स्वरूप सर्वथा कविता का सा होता है। उसमे शब्दानुप्रास और अन्त्यानुप्रास तक पाया जाता है। गोचारण के समय हृदय पर सामयिक ऋतु-परिवर्तन-जनित विकासो, तरु-पल्लव के सौन्दर्य्यो, खगकुल के कलित कलोलो, श्यामल तृणावरण शोभित-प्रान्तरों, कुसुमचय के मुग्धकर माधुर्य और वर्षाकालीन जलदजाल का लावण्य देखकर भूखो के मुख से भी आमोद सिक्त ऐसे वाक्य सुने जाते है जो स्वाभाविक होने पर भी हृदय हरण करते है और जिनमे एक प्रकार का संगठन होता है। ऐसे अवसरो पर किसी सुबोध विद्वान अथवा भावुक के हृदय से जो इस प्रकार के वाक्य निकलेंगे तो अवश्य वे सुन्दर सुगठित और अधिक मनोहर होगे, यह निश्चित है। छन्दो अथवा कविता का आदिम सूत्रपात इसी प्रकार से हुआ ज्ञात होता है।

(पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'बोलचाल')

(ङ) साहित्यिक हिन्दी : साधारण

कूप-मण्डूक भारत, तुम कब तक अंधकार मे पडे रहोगे। प्रकाश मे आने के लिए तुम्हारे हृदय मे क्या कभी सदिच्छा ही नही जागृत होती? पक्षहीन पक्षी की तरह क्यो तुम्हे अपने पीजडे से बाहर निकलने का साहस नही होता? क्या तुम्हे अपने पुराने दिनो की कभी याद नही आती। किन दिनो की, जानते हो? उन दिनों की जब तुम्हारे जहाज फारिस की खाडी और अरब के सागर मे चलते थे और जब अरब तुम्हारे व्यवसाय-निपुण

निवासियो ने, सहस्रो की संख्या मे मिस्र, ईरान और यूनान के बडे-बडे नगरों मे कोठियाँ खोल रक्खी थी। उन दिनो की जब ब्रह्मदेश, श्याम, अनाम और कम्बोडिया ही मे नही, मलय-प्रायद्वीप के जावा और बाली आदि टापुओ तक मे तुम्हारा गमनागमन था और जब तुमने उन दूरवर्ती देशो और द्वीपो में भी अपने उपनिवेश स्थापित किये थे। उन दिनो की जब तुम्हारे बौद्ध भिक्षु और अन्य विद्वज्जन गान्धार, तुर्किस्तान और चीन तक के निवासियो को अपने धर्म्म, अपनी विद्या और अपने विज्ञान का दान देने के लिए वहाँ तक पहुँचे थे। उन दिनो की जब खोस्त और यारकन्द के समीपवर्ती अगम्य प्रदेशो मे भी तुम्हारे धर्म्माचार्य्यों ने बडे-बडे मठों, मन्दिरो, स्तूपों और चैत्यो की स्थापना की थी।

[पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी, 'समालोचक समुच्चय']

(च) साहित्यिक हिन्दी :

हिन्दुस्तानी के निकट

नागरी लिपि मे छपी हुई पुस्तको और समाचार पत्रो की भाषा—चाहे आप उसे साहित्य को हिन्दी कहिए, चाहे कुछ और—फारसी लिपि मे छपी हुई पुस्तको और समाचार पत्रो की भाषा से बिल्कुल जुदा है। इस भेद भाव को जानबूझ कर न देखने या उस पर खाक डालने से काम नही चल सकता। ऐसा करना फिजूल है। अतएव यह बहुत जरूरी है कि डाक्टर सुन्दरलाल की सम्मति के अनुसार रीडरों मे परिवर्तन किया जाय। यदि ऐसा न किया जायगा तो जो लडके चौथा दरजा पास करके मिडिल स्कूलों के पाँचवे दरजे मे भर्ती होंगे उनकी पढाई मे थोड़ी बहुत बाधा जरूर आवेगी। यहाँ मतलब उन लड़को से है जिनकी शिक्षा अपर प्राइमरी दरजो मे नागरी लिपि के द्वारा हुई होगी। जो लडके चौथे ही दरजे से मदरसा छोड़ देंगे वे यदि मदरसा छोड़ने पर छोटी मोटी किताबें और अखबार को

भी समझ सके तो उनकी शिक्षा से उन्हे बहुत ही कम लाभ हुआ समझिए। जो लोग प्राइमरी मदरसो मे भाषा सम्बन्धी एकाकार करने के सबसे बड़े पक्षपाती है वे भी, आशा है, इस बात को स्वीकार करेंगे। पिगट साहब की राय का साराश यही है।

[पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी 'समालोचना समुच्चय']

(छ) साहित्यिक हिन्दुस्तानी

सन् १८५७ ई० के गदर मे खास करके सिपाही लोग शरीक हुए थे। कही-कही, जैसे अवध मे, आम लोग भी शरीक हुए थे। उन्हे डर इस वात का था कि अग्रेजी मरकार उनकी जाति नाश करने की कोशिश कर रही है। उनका मतलब यह कभी न था कि वे अँग्रेजो से इस देश को जीत लेवे और अपनी रियासत कायम करें। फिर उनको नाखुश और बेचैनी देख कर दिल्ली के बादशाह, नाना साहब, अवध की बेगम, रानी लक्ष्मीबाई आदि अपना-अपना मतलब हासिल करने के लिए उनके मुखिया बन गये। अगर ये लोग सिपाहियो को मदद न करते तो मुमकिन था कि बलवा इतना जोर कभी न बाँधता अस्तु, अब सिपाहियो के जो लोग मुरब्बी व मुखिया बनकर लडे थे उनकी ओर थोडी देर के लिए अपनी नजर फेरो। इनकी हार होने की खास वजह यह थी कि उन सब मे मेल न था। वे सब के सब खुदगर्ज थे और अपना मतलब साधने की कोशिश कर रहे थे। देश के लिए या देश की भलाई करने के लिए वे नही लडते थे। उधर बहादुरशाह अकबर के ऐसा एक जबरदस्त सम्राट बनना चाहता था। इधर नाना साहब बाजीराव की बराबरी करना चाहता था। फिर अवध की बेगम और झाँसी की रानी स्वतन्त्र बनना चाहती थी। फिर उन दिनो

हिन्दू मुसलमान को और मुसलमान हिन्दू को नही चाहते थे। ऐसी हालत में जहाँ मतलबी लोग अपनी अपनी बढती चाहते है और भाई भाई को प्यार नही करते, तब देश स्वतंत्र कैसे बन सकता है ?

[मन्मथनाथ राय, 'भारतवर्ष का इतिहास']

संज्ञाओं में रूपान्तर

पुंलिंग—आकारान्त तद्भव

		हिन्दी-उर्दू		खड़ीबोली		ब्रजभाषा
मूल रूप	एकवचन	(घोड़ा)		(घोड्डा)		(घोड़ा)
,,	बहुवचन—ए	(घोड़े)	—ए	(घोडे)		(घोड़ा)
विकृत रूप	एकवचन—ए	(घोड़े)	—ए	(घोड्डे)		(घोड़ा)
,,	बहुवचन—ओं	(घोड़ों)	—ओं	(घोड्डों)	—अन	(घोडन)

अन्य

मूल रूप	एकवचन	(आम)		(आँव)		(आम)
,,	बहुवचन	(आम)		(आँव)		(आम)
विकृत रूप	एकवचन	(आम)		(आँव)		(आम)
,,	बहुवचन—ओं	(आमों)—		(आँब्बो)	—अन	(आमन)

पुंलिग—आकारान्त तद्भव

		अवधी		छत्तीसगढी		भोजपुरी
मूल रूप	एकवचन	(घोड़वा)		(घोड़वा)		(घोड़ा, घोड़वा)
,,	बहुवचन—ग	(घोड़वे)	—मन	(घोड़वामन)		(घोड़ा, घोड़वा)
विकृत रूप	एकवचन	(घोड़वा)		(घोड़वा)		(घोड़ा, घोड़वा)
,,	बहुवचन—उन	(घोड़उन)	—मन	(घोड़ामन)—वन		(घोड़न, घोड़वन)

अन्य

मूल रूप	एकवचन		(आँव)		(गर, हि० गला)		(आम)
,,	बहुवचन		(आँव—मन)		(गरमन)		(आम)
विकृत रूप	एकवचन		(आँव, आँवे)				(आम)
,,	बहुवचन	अन—	(आँबन)	मन—	(गरमन)	—अन्हि	(आम, आमन्हि)

स्त्रीलिंग—ईकारांत

			हिन्दी-उर्दू		खड़ीबोली		ब्रजभाषा
मूल रूप	एकवचन		(लड़की)		(लौडी)		(रोटी)
,,	बहुवचन	—इयाँ	(लड़कियाँ)	—इयाँ	(लौडियाँ)		(रोटी)
वि० रूप	एकवचन		(लड़की)		(लौडी)		(रोटी)
,,	बहुवचन	—इयो	(लड़कियों)	—इयो	(लौडियो)	—इन	(रोटिन)

अन्य

मूल रूप	एकवचन		(इंट)		(इंट)		(इंट)
,,	बहुवचन	—एँ	(इंटें)	—एँ	(इंटे)		(इंट)
वि० रूप	एकवचन		(इंट)		(इंट)		(इंट)
,,	बहुवचन		(इंटों)	—ओं	(इंटों)	—अन	(इंटन)

स्त्रीलिंग-ईकारांत

		अवधी		छत्तीसगढी	भोजपुरी
मूल रूप	एकवचन	(रोटी)		(छेरी)	(रोटी)
,,	बहुवचन	(रोटी)	[मन]	(छेरी)	(रोटी)
वि० रूप	एकवचन	(रोटी)		(छेरी)	(रोटी)
,,	बहुवचन	(रोटिन)	[मन]	(छेरी)	(रोटिन)

अन्य

		अवधी		छत्तीसगढी	भोजपुरी
मूल रूप	एकवचन	(इँट)		(जिनिस)	(इँट)
,,	बहुवचन	(इँट)	[मन]	(जिनिस)	(इँट)
वि० रूप	एकवचन	(इँट)		(जिनिस)	(इँट)
,,	बहुवचन	(इँट)	[मन]	(जिनिस)	—अन्हि (इँटन्हि)

सर्वनाम

उत्तम पुरुष

		हिन्दी-उर्दू	खडीबोली	ब्रजभाष
मूलरूप	एकवचन	मैं	मैं, ग	मैं; हौं
,,	बहुवचन	हम	हम	हम
विकृत रूप	एकवचन	मुझ	मुज; मेरे	मो (चतुर्थी: मोय)
,,	बहुवचन	हम	हम, म्हारे	हम (चतुर्थी: हमैं)
सम्बन्ध	एकवचन	मेरा	मेरा,	म्हारा मेरो
,,	बहुवचन	हमारा	हमारा;	म्हारा हमारो

उत्तम पुरुष

		अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूल रूप	एकवचन	मह	मे, मैं	मे, हम
,,	बहुवचन	हम	हम, हम-मन	हम-नी का का, हम-रन
विकृतरूप	एकवचन	मई	मो, मोर	मोहि, मो हमरा
;,	बहुवचन	हम	हम, हमार	हम रा
सम्बन्ध	एकवचन	मोर-	मोर	मोर, मोर हमार हम-रे
,,	बहुवचन	हमार	हमार	हम-नी, हम रन

मध्यम पुरुष

		हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
मूलरूप	एकवचन	तू	तू	तू
,,	बहुवचन	तुम	तुम;	तुम तुम
विकृतरूप	एकवचन	तुझ	तुज	तो (च० तोय)
,,	बहुवचन	तुम	तुम	तुम (च० तुमैं)
सम्बन्ध	एकवचन	तेरा	तेरा, थारा	तेरो
,,	बहुवचन	तुम्हारा	तुमारा; थारा	तुमारो, तिहारो

मध्यम पुरुष

		अवधी	छत्तीसगढी	भोजपुरी
मूलरूप	एकवचन	तुँइ	ते तै	तूं, तें
,,	बहुवचन	तुम, तँ	तुम, तुम मन	तोह-नी का, तोहरन
विकृतरूप	एकवचन	तुइ	तो, तोर	तोहि, तो, तो-हरा
,,	बहुवचन	तुम,	तुम्ह, तुम्हार	तोह-नी तोह-रन
सम्बन्ध	एकवचन	तोर,	तोहार, तोर	तोर, तोरे, तोहार, तोहरे
,,	बहुवचन	तुम्हार	तुम्हार	तोहार, तोर

प्रथम पुरुष

		हिंदी उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
मूलरूप	एकवचन	वह	वो	बू; बौ
,,	बहुवचन	वे	वे	वे
विकृतरूप	एकवचन	उस	उस	बा (च० बाय)
,,	बहुवचन	न	उन; विन	बिन (च० बिनै)
		अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
मूलरूप	एकवचन	ऊ, वा	उओ	ऊ, ओ
,,	बहुवचन	उइ, वह	उन, ऊओ-मन	ऊ सभ, उन्ह-का
विकृतरूप	एकवचन	उइ	उओ, उओ-कर	ओहि, ओह हो
,,	बहुवचन	उन	उन, उन्ह	उन्हु-का, उन्हु-करा

क्रिया के मुख्यरूप तथा कालरचना

मुख्यरूप

	हिंदी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
क्रियार्थक संज्ञा	चला-न	चलना	चलिबो
वर्तमान कृदन्त कर्तरि	चल-ता	चलै	चल्तु
भूत कृदत कर्मणि	चल-आ	चला	चल्यो

कालरचना

प्रथमपुरुष एकवचन			
वर्तमान काल	चलता है	चलै है	चल्तु ऐ (है)
भूतकाल	चलता था	चलै था	चल्तु ग्रो (है)
भविष्यकाल	चलेगा	चलैगा	चलैगो

मुख्यरूप

	ग्रवधी	छत्तीसगढी	भोजपुरी
क्रियार्थक संज्ञा	देखब	देखब	देखल
वर्तमान कृदन्त कर्तरि	देखत, देखति	देखत	देख-ते देखत, देखित
भत कृदन्त कर्मणि	देखा	देखे	देख-ल, देख-लस

कालरचना

प्रथमपुरुष एकवचन			
वर्तमान काल	देखत ग्रहै	देखत हवै	देखत-बा, देख-ता
भूतकाल	देखत रहइ	देखे रहिस	देखत रहे
भविष्यकाल	देखी, देखिहै,	देख-हो,	देखि है देखी

सहायक क्रिया

वर्तमानकाल

	हिन्दी-उर्दू	खड़ी बोली	ब्रजभाषा
प्रथम पुरुष एकवचन	है	है	है
,, बहुवचन	है	है	है
म० पु० एकवचन	है	है	है
,, बहुवचन	हो	हो	हौ
उ० पु० एकवचन	हूँ	हूँ	हौ
,, बहुवचन	है	है	हैं

वर्तमानकाल

	ग्रवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
प्रथमपुरुष एकवचन	है, ग्रहै, बाटै	हवै, है	बा, बाटे, हा, हवे
,, बहुवचन	है, ग्रहै, बाटै	हवै, है	बाटन; हवन
म० पु० एकवचन	है, ग्रहै, बाटे	हवस, हस	बाट; हौवा
,, बहुवचन	हौ, ग्रहौ, बाटौ	हवौ, हौ,	बाटा, हौवा
उ० पु० एकवचन	हौ, ग्रहौ, बाटौ	हवौ, हौ,	बटो होंई
,, बहुवचन	है, ग्रहै, बाटै	हवन, हन	बटी, हौई

भूतकाल

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
भिन्न पुरुषो मे पु० ए० व०	था	था	हो, हतो
,, ,, बहुवचन	थे	थे	हे, हते
सब पुरुषो मे स्त्री० ए० व०	थी	थी	ही, हती
,, ,, बहुवचन	थी	थी	हीं, हती

ग्रवधी

भिन्न पुरुषों मे पु० ए० व०	रहौ रहै।
,, ,, ब० व०	रहन, रहौ, रहै।
भिन्न पुरुषो मे स्त्री० ए० व०	रहौ, रहै रहै।
,, ,, बहुवचन	रहन, रहौ, रहै।

छत्तीसगढी	भोजपुरी
रह्येउं, रहे, रहिस।	रह-लो, रह-ले, रह-ल।
रहेत, रह्येउ, रहिन।	रह-लीं, रह-ला, रह-लन।
रह्येउ, रहे रहिस।	रहली, रहली, रहली।
रहन, रह्येउ, रहिन।	रहल्यूं, रहलू, रहलिन।

सहायक क्रिया के अन्य मुख्य रूप

हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा	अवधी	भोजपुरी
होना	होना	होनो	होब	भइल
हो	होवे	होय	होइ	हो
हुआ	हुया	भयो	भवा	भइल
होगा	होगा	होयगो	होई	होई
होता	होता	होतो	होत	होइत

विभक्ति या कारक-चिह्न

	हिन्दी-उर्दू	खड़ीबोली	ब्रजभाषा
कर्ता	ने	ने	नै
कर्म	को	को कू	कौ, कूँ
करण	से	से	तै, सूँ
संप्रदान	को, के, लिए	को, के खातिर	कौ, कू
अपादान	से	से	तै, सूँ
सम्बन्ध	का, के, की	का, के की	कौ के, की
अधिकरण	मे, पर	मे, पै	मै, पै

	अवधी	छत्तीसगढ़ी	भोजपुरी
कर्ता	—	—	—
कर्म	का,	का,	के
करण	से, ते, सेनी	ले, से	से, ते, सन्ते
संप्रदान	का काह्याँ	ला, बर	के, खातिर, लाग, ला
अपादान	से, ते, सेनी	ले, से	से, ले
सम्बन्ध	केर, का, के, की	के	क, के, कर
अधिकरण	माँ, पर	मा	मे, पर